The Hindi Historical Primers Series No 6

संक्षिप्त इतिहास-माला संख्या ६

"इतिहास निज अरु अन्य देशन के रचहु तत्काल" (हिन्दी अपील)।

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।"

* स्पेन का इतिहास *

लेखक

प० चन्द्रमनोहर मिश्र

सम्पादक

पण्डित श्यामविहारी मिश्र एम० ए०

तथा

पण्डित शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०

सहायक सम्पादक

पण्डित सोमेश्वर दत्त शुक्ल बी० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग

सन् १९१४

[मूल्य ।=)

Printed and published by Apurva Krishna Bose,
at the Indian Press, Allahabad

विषय-सूची

परिशिष्ट

सम्पादकीय भूमिका

हमारा बहुत दिनों से विचार था कि यदि हिन्दी में पृथ्वी के सभी मुख्य मुख्य देशों का संक्षिप्त इतिहास प्रकाशित हो जाता तो देश का बहुत बड़ा उपकार होता और हिन्दी जाननेवाले महाशयों का दृष्टिक्षेत्र बहुत कुछ विस्तृत हो जाता। अवश्य ही हमारे यहाँ इतिहास का एकदम अभाव नहीं है पर इस ओर हमारे लेखकगणों का सदा से बहुत कम ध्यान रहा है, ऐसा मानने में कदाचित् कोई भी महाशय विशेष हठ न करेंगे। इसका फल यह हुआ कि केवल संस्कृत एवं हिन्दी जाननेवाले अपने देश का भी वृत्तान्त बहुत ही कम जान सकते हैं और पृथ्वी के अन्य प्रभावशाली देशों के हाल जानने से वे नितान्त वंचित रह जाते हैं यहाँ तक कि अधिकांश लोगों को ऐसे देशों के नाम तक नहीं ज्ञात होते। यह दशा कैसी शोचनीय है सो लिखने की विशेष आवश्यकता नहीं। यही कारण है कि हमारे यहाँ के लोग जानते ही नहीं कि किन किन कारणों से देशों एवं राष्ट्रों का अभ्युदय एवं अधःपतन होता है, कौन बातें और रीतियाँ उत्तम एवं कौन निकृष्ट हैं, किस प्रकार के आचार विचार से देश और जाति को लाभ पहुँच सकता है और किससे हानि ही हानि सम्भव है, किन किन कारणों से किन किन देशों का उद्भव हुआ और उन कारणों को

याथातथ्य अथवा समुचित परिवर्तनो के साथ हम अपने देश एव जाति में कैसे उपस्थित कर सकते हैं; किस चाल ढाल पर चलने से किन किन देशों एव जातियों अथवा राष्ट्रों को क्या हानि पहुँची अथवा उनका कैसे ह्रास या सर्वनाश हो गया और हम में वे अथवा वैसी ही बुराई की चाल ढालें हैं या नहीं और यदि हैं तो हम उनको कैसे हटा सकते हैं इत्यादि, इत्यादि ऐसे ही सैकडो बडे ही महत्त्व के प्रश्न हैं कि जिन पर ध्यान देने से हमारा हित होगा एव जिन्हें अलग छोड देने से हमारी न जाने क्या क्या दुर्दशा या सर्व-नाश तक हो सकता है। ऐसे प्रश्नों पर ध्यान देने की पात्रता हम में तभी आ सकती है जब हम ससार के सभी ऐसे देशों का इतिहास जान लें कि जो आज दिन उच्च दशा में हैं अथवा पूर्व काल में रहे हैं, एव जो देश अपनी असावधानी से बिलकुल मिट्टी में मिल गये हैं। कुछ जातियाँ ऐसी भी हैं जो अपनी मूर्खता के कारण इस "असार" ससार से कूच कर बिलकुल निर्मूल हो गईं अथवा ऐसी भयानक अधोगति को प्राप्त हो गईं कि उनका पुनरुत्थान असम्भव हो गया है। ऐसी जातियों का पूर्ण वृत्तान्त जान लेना, उनकी त्रुटियो को भली भाँति समझ कर उन पर मनन करना, और अपनी जाति से उन्हें हटाने का पूर्ण प्रयत्न करना प्रत्येक समझदार मनुष्य का आवश्यक कर्तव्य है। पर केवल हिन्दी जाननेवाले इतिहास-ग्रन्थों के अभाव से इस पवित्र कर्तव्य के पालन करने में नितान्त असमर्थ हैं।

दूर की बात जाने दीजिए। उदाहरणार्थ बेचारे शूद्रों एव हिन्दुओं की नीचातिनीच जातियों पर ही दृष्टि दीजिए। इस बीसवीं

शताब्दी में ऐसा माननेवाले बहुत न मिलेंगे कि ईश्वर ने ही इन "नीच" जातियों को सदा के लिए नीच बना दिया है और यह क्रूर आज्ञा दे दी है कि वे दो, चार, छ, दस, बीस, पचास पुश्तों तक नहीं बरन् अनन्त काल तक, लाखों करोड़ों पीढ़ियाँ बीतने पर भी, सदा के लिए नीच ही बनी रहें और उन्हें उन्नति करने का कभी अवसर ही न प्राप्त हो। न्यायशील ईश्वर पर ऐसा कलंक लगाना नितान्त अनुचित है। कुछ महाशय कहने लगेंगे कि ईश्वर ने किसी को भी अनन्त काल के लिए नीच बने रहने की आज्ञा नहीं दी है। आत्माओं की नीचातिनीच योनियों से लेकर क्रम से उच्चातिउच्च पद पर स्वकर्मानुसार पहुँचने का उसने यह प्रबन्ध किया है कि अच्छे कर्म करने से भंगी, चमार और हलालखोर तक दूसरे जन्म में श्रेष्ठतर जातियों में उत्पन्न हो सकते हैं और इसी भाँति धीरे धीरे उन्नति करते करते ब्राह्मण योनि तक प्राप्त कर सकते हैं। इसका उत्तर हम यह देते हैं कि इस तर्क के अनुसार ब्राह्मण एवं हिन्दुओं की अन्य उच्च जातियों को भी उन्नति करने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि कर्म के जोर से वे दूसरे जन्म में अँगरेजों अथवा अन्य प्रभावशाली जातियों (यथा जर्मन, जापानी इत्यादि) में उत्पन्न हो सकते हैं। प्रश्न तो यह है कि हमारी हिन्दू जाति कभी पूर्ण उन्नति करे या नहीं? शायद कोई भी हिन्दू यह न कहेगा कि हिन्दुओं की उन्नति न हो, बरन् वे लोग दूसरे जन्म में योरोपियन, जापानी, या अमेरिकन हों। इसी भाँति बेचारी "नीच" जातियों को भी इसी जन्म में क्यों उन्नति न करनी चाहिए? इतिहास से यह

सप्रमाण सिद्ध हो चुका है कि ये "नीच" जातियाँ पहले यहाँ राज करती थीं और हमारे पूर्व पुरुष आर्यो ने तिब्बत के आस पास मध्य एशिया के किसी स्थान से अथवा अपने "आर्क्टिक होम" से आकर इन पर आक्रमण किया और धीरे धीरे इनका सारा देश विजय कर लिया। तत्पश्चात् इनको पढने एव उन्नति के अन्य सभी मार्गों से वञ्चित कर उन्होंने शनै शनै इन्हें ऐसा नीचातिनीच बना दिया कि अब इनमें से अधिकांश लोगों की गणना मनुष्यों में करना व्यर्थ है। हमारी समझ में भारत-वर्ष की मनुष्य-गणना में ऐसे मनुष्यो की गिनती करना ही ठीक नहीं और तब जान पडेगा कि यहाँ की जन-संख्या जो इकतीस करोड कहलाती है वह एकदम भ्रममूलक और अशुद्ध है। एक तो यहाँ स्त्री-शिक्षा के अभाव से जनसख्या का अर्द्धांश अलग ही छोड़ देना चाहिए और फिर इन बेचारी पशुवत् जातियो एव अन्य जातियों के पशुवत् मनुष्यो को गणना के बाहर कर देने से इस देश की आबादी सवा अथवा डेढ करोड़ मात्र की रह जावेगी और प्राय. यही संख्या यहाँ के पढे लिखे लोगों की है क्योंकि पुरुषों में यहाँ प्राय. ११ सैकडे, एव स्त्रियों में केवल ७.५ सैकडे अर्थात् हजार पीछे ७½ मात्र की सख्या "त," "म," कर लेने वाले मनुष्यों की है! शिव! शिव!! भला अंधकार का कहीं पता है!!! अस्तु, यह बेचारी नीचातिनीच जातियाँ भी क्या अब कभी पूर्ण उन्नति कर सकेंगी? शायद कभी नहीं। शहरों में इतना विशेष अन्तर नहीं जान पडता, पर गाँवो में आर्य्य-जातियों और अनार्य्यों में मनुष्य और पशु का सा भेद पाया जाता है। शताब्दियों से मार खाते खाते और जकें उठाते उठाते

"नीचातिनीच" जातियाँ ऐसी निर्जीव हो गई हैं कि कुछ कहते नहीं बनता। केवल एक ब्राह्मण या क्षत्रिय अगर पचास चमारों को भी साथ ही साथ मार चले तो भी बेचारे चमारों से सिवा हाय हाय करने एवं इधर उधर भागने के और कुछ भी न बन पड़े। सो यद्यपि आर्य्य जाति प्राय एक हजार वर्ष से पददलित और पराधीन हो रही है तो भी उसका दबदबा * अब तक "नीच" जातियों पर कई अंशों में जैसा का तैसा वर्तमान है। हम भली भाँति जानते हैं कि बहुतेरे कट्टर विचारों के लोग ये बातें सुनकर भौं चढ़ाने और कहने लगेंगे कि "इन लेखकों को क्या यही अभीष्ट है कि चमार ब्राह्मणों और ठाकुरों को जूतों से पीटें?" इसके उत्तर में हमारा सविनय निवेदन है कि हमारा यह अभीष्ट नहीं, परन्तु हम लोग ही बेचारे चमारों को क्यों सतावें ? कदाचित् इसी के बदले, "जो जस करै सो तस फल चाखा" के अनुसार हम लोगों के साथ भी अन्य देशों की प्रबल जातियाँ क्रूर बर्ताव कर रही हों। ट्रांसवाल, नेटाल, आस्ट्रेलिया इत्यादि अनेक देशों में हम लोगों का क्या सम्मान होता है सो इतिहास और समाचार-पत्र-प्रेमियों से छिपा नहीं है। वहाँ हम लोगों के साथ उससे भी नीचतर बर्ताव किया जाता है जैसा हम बेचारे चमारों के साथ करते हैं। सच पूछिए तो इसमें आश्चर्य्य ही क्या है ? न्यायशील अंगरेजी जाति को छोड़ यदि भारतवर्ष पर किसी अन्य ऐसीही प्रबल जाति का अधिकार होता तो कदाचित् कुछ दिनों में हमारी प्राचीन आर्य्य जाति भी धीरे धीरे चमारों की ही दशा को पहुँच जाती। अँगरेजों ने हम लोगों

* Prestige

के लिए शिक्षा का विशाल द्वार खोलकर हमें यह अवसर दे दिया है कि हम ऐसी शोचनीय दशा से बचें। पर जो जाति अपनी उन्नति करने में आप ही चेष्टा न करे उसे कोई भी उच्च नहीं बना सकता। इसी कारण हमारी समझ में अब भी बहुत सम्भव है कि समस्त हिन्दू जाति की वही दशा हो जावे जो बेचारे कोल, गोंड, सन्थाल, भंगी, पंचम, कजड, चमार इत्यादिकों की आज दिन है और कदाचित् सदा रहेगी। क्या कोई भी कहेगा कि ये "नीच" जातियाँ अब किसी विचार-कोटि में आनेवाले समय के भीतर संसार की उच्च जातियों के साथ अपना स्थान ले सकेंगी? वैसेही यदि हिन्दू जाति भी सावधान होकर कूपमण्डूक वाली बातें एक किनारे रख अपनी उन्नति में इतिहास-सिद्ध उद्योगों द्वारा शीघ्र तत्पर न हो जायगी तो कोई आश्चर्य नहीं जो वह किसी दिन इन्हीं नीचातिनीच जातियों के पद को प्राप्त हो जावे॥ इस भयावनी दशा से बचने का उपाय यही है कि संसार के इतिहास पर ध्यानपूर्वक मनन कर हम लोग अपनी त्रुटियाँ और बुराइयों को हटावें तथा धीरे धीरे वर्तमान राम-राज्य में अपनी पूर्ण उन्नति कर लें। इस पवित्र उद्देश्य के फलीभूत होने में यदि यह इतिहासमाला कुछ भी सहायक हुई तो इससे सम्बन्ध रखने वाले हम सभी लोग क्या लेखक, क्या सम्पादक, क्या प्रकाशक, अपने को धन्य मानेंगे।

इतिहास से क्या क्या लाभ होते हैं उनका उल्लेख करने से भूमिका का विस्तार बहुत बढ़ जायगा। संक्षिप्त रूप से ऊपर जो कुछ लिखा जा चुका है उसके अतिरिक्त इतिहास से एक तो मनोरंजन

खूब होता है। दूसरे आदमी का अनुभव बेहद बढ़ जाता है। तीसरे उसे भली भाँति ज्ञात हो जाता है कि मैं जो कुछ अपने ही आस पास देखता रहा हूँ और जिसे ही मैं ससार समझता था वह वास्तव में गूलर फल का ही ससार कहा जा सकता है। चौथे उसका अधकार जनित अभिमान छूट जाता है। पाँचवें उसका कट्टरपन भी पूर्णतया घिस जाता है, क्योंकि उसे ज्ञात हो जाता है कि ससार की प्राय॰ सभी जातियाँ अपनेही धर्म एव विश्वासों को, अपनेही रीतिरवाजों एव पहिनाव, चाल, ढाल इत्यादि को सदा से सर्वश्रेष्ठ मानती आई हैं और आज तक मानती जाती हैं, यद्यपि यह सम्भव नहीं कि सभी धर्म, विश्वास, रीति या चाल सर्वोत्तम हो सकें और सम्भव है कि निष्पक्षपात होकर मनन करने से विदित हो जाय कि हमारी ही सभी बातें ससार भर में सर्वोच्च न ठहरें वरन् कुछ अन्य जातियो की शायद सभी, अथवा कम से कम कुछ बातें हम से श्रेष्ठतर हों। ध्यान रहे कि जैसे हम यह सुन कर चिढ सकते हैं कि हमारे आचार, विचार, धर्म, विश्वास, पहिनाव, ओढाव, रस्म, रवाजे सर्वोत्तम नहीं हैं उसी भाँति अन्य जातियो के कट्टर और अनुभवशून्य लोग भी यह सुन कर जामे से बाहर हो सकते हैं कि ससार में किसी जाति की रीतियाँ उनसे उत्तमतर हैं। जैसे हम अन्य जातियों को नापाक और पतित समझते हैं वैसेही बहुतेरी उच्च जातियाँ हमें नीच, घृणित अर्द्धासभ्य कहती हैं। जैसे हम अन्य जातियों का छुआ हुआ भोजन नहीं खाते वैसेही कुछ अन्य जातियाँ हमें छू जाने तक में अपना परम अपमान समझती हैं। जैसे हम जानते हैं कि लडकों के कान नाक छेद,

उनमें सोने की बालियाँ डाल देना, तथा उनके हाथ पैरों में चाँदी की बेड़ियाँ पहिनाना परमावश्यक है वैसेही कुछ अन्य सभ्य कहाने वाली जातियाँ अपने अंग गोदना, पैर छोटे करने के लिए स्त्रियो को बचपन से ही पीतल के जूते पहना कर लुंजी कर देना और ऐसी ही अनेक हास्यास्पद रवाजो का प्रचलित रखना सभ्यता की सामग्री समझती हैं। निदान कहाँ तक लिखे, इतिहास पढ़ने से अनेकानेक लाभ हैं और इसका अधिकाधिक प्रचार करना प्रत्येक देश एव जातिहितैषी का पवित्र कर्तव्य है। हमारी समझ में यदि हिन्दी-पठित समाज का दशमांश भी पृथ्वी के प्रभावशाली देशों का इतिहास जान ले तो इस अभागे देश, तथा इस बृहत् एव किसी समय में परमोच्च, परन्तु अब अधोगति-प्राप्त प्राचीन और पवित्र आर्य्य (हिन्दू) जाति का पूर्ण उपकार एव पुनरुत्थान होना अब भी सम्भव है, नहीं तो ऐसी महत्त्वपूर्ण और परमविस्तृत जाति का अँगरेजी राम-राज्य में भी न जाने कैसा बुरा हाल अथवा सर्वनाश तक हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं।

इस इतिहास-माला में निम्न लिखित देशों का हाल लिखा जायगा।—

१ भारतवर्ष (हिन्दुस्तान)।
२ मिश्र अर्थात् इजिप्ट।
३ ग्रीस अर्थात् यूनान।
४ इटली अर्थात् रोमन प्रदेश।
५ चीन।
६ टरकी।
७ फारस, अरब, व अफ़गानिस्तान।
८ अफरीका के राज्य तथा आस्ट्रेलिया।
९ स्पेन।
१० पुर्तगाल।
११ हालैंड डेन्मार्क व स्विटजरलैंड।
१२ आस्ट्रिया।
१३ स्वीडेन और नारवे।

१४ इगलैंड अर्थात् ग्रेटब्रिटेन।
१५ जापान।
१६ जर्मनी।
१७ रूस अर्थात् रशिया।
१८ सयुक्त रियासतें-अमेरिका।
१९ फ्रांस अर्थात् फरासीस।
२० पृथ्वी के अन्य देश।

ये पुस्तके ऊपर लिखे अथवा किसी क्रम-विशेष से नहीं प्रकाशित होंगी वरन् सुभीते के अनुसार निकलती रहेंगी। ऊपर की सूची में नम्बर इस हिसाब से लगाये गये हैं कि न० १—५ तक वे देश हैं जिनकी सभ्यता एव उन्नत दशा किसी समय में बहुत बढी चढी थी परन्तु अब सिवा न० ४ के और सभी का बुरा हाल है, तथा उसकी दशा भी पहले के देखते अब बहुत मन्द है। नं० ६ से १३ तक के देशों की सभ्यता वैसी प्राचीन नहीं पर बीच में उनकी भी अच्छी उन्नति हुई थी और कतिपय अब भी भली चगी दशा में हैं। न० १४—१९ के देश इस समय पूर्ण प्रतिभाशाली हैं, एवं न० २० में पृथ्वी के उन शेष देशों का हाल लिखा जायगा जिन्होंने ससार के इतिहास में कभी कुछ भी योग दिया है। सम्भव है कि इस इतिहास-माला में २० के बदले २२-२३ पुष्प गूँथ दिये जायँ, क्योंकि ससार के धर्मों की बाबत शायद एक जिल्द लिखने की आवश्यकता हो और एक जिल्द में समस्त देशों का सगठित इतिहास लिखना पडे।

अब तक इस "सक्षिप्त इतिहास माला" के ५ ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं (अर्थात् जर्मनी, फ्रांस, रूस, इगलैंड एव जापान के इतिहास), और यह छठा स्पेन का इतिहास भी निकल रहा है। जिस उत्साह के साथ हिन्दी पठित समाज ने हमारा

आदर एव गौरव बढाया है उस ,के लिए हम उस के चिर बाधित रहेंगे । ऐसा प्रोत्साहन पाकर हमारा चित्त प्रफुल्लित हुआ है और हम ने सकल्प किया है कि यथासाध्य यह इतिहास-माला अब शीघ्रही सम्पूर्ण की जाकर हिन्दी-सेवियों के गले में पड सके ।

लखनऊ, }
१७-१-१९१४ }

श्यामविहारी मिश्र,
शुकदेवविहारी मिश्र ।

लेखक का वक्तव्य।

"पल्लवित फूलत नवलनित संसार विटप नमामहे"।

इतिहास मात्र इस मूल मंत्र का कीर्तन किया करता है। सूर्य्य जो प्रज्वलित होता हुआ मध्याह्न तक सिर पर आ गया है तो अब वह उसी प्रकार क्रमश शीतल होता हुआ रसातल को चला जायगा। "तुलसी है धरा को प्रभाव यही जो फरा सो झरा जो बरा सो बुताना"। संसार के चक्र-रूपी भ्रमण में पड कर इस नियम का उल्लंघन करना असंभव है। तो फिर किसी देश जाति तथा वंश का अभ्युदय और अधःपतन होना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। ऐसे ही स्पेन राज्य का किसी समय हर विषय में इस भूमंडल के शिखर पर चढ कर नीचे गिर जाना भी उक्त नियम का प्रतिपादन कर रहा है।

किसी नियम को केवल "नियम" ही समझ रखना बड़ी बुद्धिमानी का काम नहीं है। जैसे प्रातःकाल हुआ, तो चन्द्र अस्त हो जायगा और सूर्य उदय होगा ऐसा मान बैठना कुछ विशेष बुद्धि से संबंध नहीं रखता। वरन् सवेरा क्यों हुआ, सूर्योदय किस प्रकार होगा, चंद्र क्यों मलिन हो जायगा इत्यादि बातों के खोजने वाले ही बुद्धिमान् और प्रभावशाली कहे जाते हैं। इसी प्रकार इतिहास प्रेमी इस बात के जानने की अभिलाष करते हैं कि अमुक देश व जाति का क्यों और कैसे अभ्युदय और अधः-

पतन हुआ ? इस ज्ञानरूपी पट के दर्शन के लिए इतिहास ही नेत्र हैं।

स्पेन के इतिहास में विशेष ध्यानाकर्षक बातें ये हैं: (१) स्पेन एक महान् विभवशाली पद पर पहुँच कर अचानक साधारण श्रेणी से भी गिर जाता है (२) जब से इतिहास का पता चलता है, यहाँ के किसी प्राचीन निवासी की प्रभावशाली राजाओं में गणना नहीं देखी गई, अन्य देश वाले ही विजय कर राज्य स्थापित करते रहे। (३) इस स्थान में शांति रूपी वृक्ष भलीभाँति फूलते फलते नहीं देख पड़ा है अथवा यों कहिए कि शांति की अपेक्षा अशांति अधिकतर दृष्टिगोचर होती है।

पाठको की सुगमता के हेतु इस इतिहास के भाव को हम एक उदाहरण में दिखलाते हैं। स्पेन बहुत बातो में भारतवर्ष के सदृश है :—

(१) भूगोलादिक विषय में दोनों प्रायद्वीप हैं। इसके एक ओर अगम हिमालय एव उसके एक ओर दुसध पेरीनीज है।

(२) उपज में दोनो स्थान सहज ही सपूर्ण हैं। यदि योग्य प्रयोग और प्रबंध किया जाय तो दूसरे देश का मुँह ताकना न पडे। अन्न जल से लेकर सोना चाँदी आदि तक हर भाँति के

पदार्थ उपस्थित हैं, और आवश्यकतानुसार नाना प्रकार की जरूरी वस्तुए बनाई जा सकती हैं।

(३) धर्म-सबध में दोनो स्थानो की पूर्ण तुलना है। जब तक धर्म का पालन धर्म रीति से होता रहा, तब तक भारतवर्ष की गौरव ज्योति पर मलिनता न आ सकी। पुन मुसलमानी समय में भी नीतिप्रेमी अकबर की सहनशीलता प्रकट ही है। इसी प्रकार स्पेन में हंनिबाल आदि का समय देखिए। फिर अरबवालों का अभ्युदय देखिए अथवा अन्य मुसलमानो व ईसाई राज्यो के अकुर से पूर्ण वृद्धि तक दृष्टि डालिए।

(४) जब धर्म धर्म-पथ त्याग एक कट्टर मजहबी जोश में आ गया अर्थात् अधम के तुल्य हो गया तब वह सारी उन्नति ले रसातल धस गया है। उसी अकबर के विस्तृत राज्य पर उसी धर्म का अनुयायी औरगजेब बैठा, परन्तु जब उस धर्म ने उक्त कट्टर रूप धारण किया तो परिणाम क्या पूछना है? इसी प्रकार ज्यूज पर अत्याचार और उसका फल, गोथ वश का अत, अरब लोगो की दशा, फिलप (२) व (३) के व्यवहार और अनुपम आरमेडा का आश्चर्यजनक सर्वनाश देखिए।

यदि यहाँ (भारतवर्ष में) विधर्मियो की दृष्टि से छूत लगती थी, काफिरों पर खिराज लगता था, उनको उच्च पद नहीं दिया जाता था, 'बरजोरी' धर्म ग्रहण कराया जाता था, व जीवित पुरुष गड़वा दिये जाते थे तथा किताबें जलवा दी जाती थीं, तो स्पेन में भी विधर्मी प्रजा से घृणा थी, उन पर टैक्स लगता था, उनको

कोई अधिकार नहीं दिया जाता था, सब को मुसलमानी (खतना) करानी पडती थी, (फिर समय के फेर से) कोई मुसलमान अपनी रस्म नहीं मना सकता था। मुसलमान और ज्यूज विधर्मी होने के कारण देश से निकाल दिये गये। यदि कोई विधर्मी की रक्षा करे अथवा राज्य-धर्म ग्रहण कर पुन त्याग दे, तो उसे शूली दंड दिया जाता था। स्पेन में पुस्तको का जलाना ही न था वरन पुस्तक के स्वामी को आयु पर्यंत दासत्व भोगना पडता था।

(५) मुसलमानी राज्य दोनों स्थानो में एक ही भांति निर्बल हुआ। यहां जो कोई आक्रमण कर चढ़ आगया, वही दिल्ली-पति को दलन कर शाहशाह बन गया। राजच्युत शाही घराने वाले इधर उधर मारने खाने लगे और जीविका के हेतु कहीं छोटी मोटी रियासत बना कर निर्वाह करने लगे। स्पेन में भी वैसीही दशा थी। जिस तरह पटवा किसी सुमिरनी को पोहता है तो एक गुरिया दूसरे गुरिया को सकेल एक ओर कर देता है और शेष धागे में अपना ही अधिकार समझ स्वच्छंद सरकती है, दूसरी गुरिया उसको भी शीघ्र उसी भांति एक कोने में दाब देती है, इस तरह सुमरनी गुरियो से ठसाठस भर जाती है और प्रत्येक गुरिया के पास केवल उसकी नाप भर ही धागा रह जाता है, ठीक उसी प्रकार स्पेन और हिंदोस्तानरूपी धागे मुसलमानी समयरूपी पटवा के हाथ से राज्यच्युत-शाहों की रियासतरूपी गुरियों से ठसाठस पिरो दिया गया था।

(६) मुसलमानो के अधिकार से दोनो देश ईसाइयों के हाथ गये और प्राय एक ही रूप से गये। जब मुसलमानी राज्य का डामाडोल होने लगा, तभी ईसाई रियासतो ने जड पकडी और उनकी निर्बलता पर इनकी सबलता सदैव निर्भर रही।

हम अपने इतिहास की त्रुटियो के सबध मे पाठकों से यहाँ कुछ निवेदन कर देना आवश्यक समझते हैं —

(१) प्रारम्भ में कहीं कहीं इतिहास-शून्यता प्रकट होती है, अर्थात् शताब्दियाँ की शताब्दियाँ दो एक पृष्ठ में समाप्त कर दी गई है। इसका कारण लेखक का आलस्य नहीं, वरन् इतिहासाभाव है—वहाँ के इतिहास ही का पता नहीं है।

(२) कुछ दूर चलकर ऐसी त्रुटि कदाचित् पुनः दृष्टिगोचर हो, जिस समय यह राज्य अनेक रियासतों में विभाजित हो गया था, तब प्रत्येक पराक्रमी पुरुष अपनी रियासत में राजाधिराज बन बैठा था। स्वतन्त्र हो ये लोग "अपनी अपनी डफली और अपना अपना राग" गा रहे थे। अब ध्यान दीजिए कि इन डेढ डेढ ईंटों की मस्जिदों का कैसे हिसाब हो सकता है ? यदि लिखने का प्रयत्न भी किया जाय, तो ऐसे सक्षिप्त ग्रथ में इन सूक्ष्म बातो के लिए स्थानाभाव है।

सम्वत अरसठ जानिए, तेहि पूर्वार्ध उनीस।
जन्म अष्टमी जगत सिधि, जन्म लीन जगदीस॥
साहित के सचार हित, यह 'इस्पेन' सदर्प।
श्याम नाम शिरमौर वर, सादर चरन समर्प॥

चंद्रमनोहर मिश्र।

हमारा वक्तव्य।

मातृभाषाप्रेमियो के हाथ में इस स्पेन के इतिहास को समर्पण करने में हमें बड़ा हर्ष होता है। हमें आशा है कि अपनी स्वाभाविक उदारता का परिचय देते हुए हिन्दी पठित समाज इस पुस्तक को भी अपना कर हमारे उत्साह को दूना करेगा।

फ्रांस तो पूरे तौर से ही प्रजा-सत्तात्मक राज्य है, परन्तु इग्लैंड और जर्मनी इत्यादि राज्यों के भी देखते हुए स्पेन में इस बीसवीं शताब्दी में और उसके योरोप में होते हुए भी आनुषंगिक दृष्टि से राजा के अधिकार कुछ अधिक विस्तृत और प्रजा के स्वत्व विशेषतया परिमित हैं। साधारणतया देखने से यह जरूर आश्चर्यजनक विषय है कि यद्यपि यह देश उस योरोप महाद्वीप का अंश है जिसका समस्त वायुमण्डल उचित और नियमित स्वतन्त्रता के प्रबल वेग और प्रजा के सारे राजनैतिक स्वत्वो की सुगन्धि से भरा हुआ है, तथापि वह शासन-प्रथा में प्राय पुरानी लकीर का ही फकीर है—अन्य पाश्चात्य राज्यो से अर्वाचीन शासन-प्रणाली के आनन्दो का उपभोग करने में वह कोसो पीछे है। इस दशा में भी इस में सन्देह नहीं कि कुल मिला कर स्पेन की शासन-रीति अच्छी ही है और वहाँ के निवासियो को अनेक स्वत्व प्राप्त हैं एवं उन्हें देश के कल्याण को अपना ही कल्याण समझ कर उसको अपने विचारों से प्रबल बनाने के लिए अनेक अवसर दिये जाते हैं।

पहले पहल ये अपने यहां की पचायतों में ही शासन करना सीखते हैं, और फिर उनके लिए प्रादेशिक पार्लमेंट का रास्ता खुला हुआ है जो प्राय स्वाधीन हैं। अनन्तर उनके प्रतिनिधि देश भर की विराट् सभा कोर्टेस के दूसरे अश कांग्रेस में जाकर बैठते और देश हित के उपायो को सोचकर राजा, मन्त्रि-समिति, एव सिनेट के सदस्यों को सभी बातो में परामर्श देते हैं और बहुत सी बातो में इनकी चल भी जाती है, परन्तु हम जहाँ तक समझते है इग्लैंड और जर्मनी की शासन-सभाओं के सर्वसाधारण के प्रतिनिधियो की तरह ये बहुत ज्यादा जोर देकर अपने मन्तव्यों का प्रबल प्रभाव पैदा करने के लिए पूर्णरूप से अधिकारी नहीं हैं—ये परामर्श मात्र देते, पर वे अपने नियमित स्वत्वों की दृढ़ता से दृढ होकर यह कहते हैं कि नहीं, ऐसा ही होगा। बस, इतनी बात में अभी जर्मनी एव इग्लेड और स्पेन की शासन प्रथा में भेद है।

चित्त में यह प्रश्न जरूर उठता है कि किस कारण से योरोप की सर्वव्यापिनी स्वतन्त्रता-सरिता की स्वच्छ धारा वहां के प्राय सब देशो में बह कर भी स्पेन को पूरे तोर से हरा भरा न कर सकी, जब उसी नियमित स्वतन्त्रता के प्रताप से जर्मनी, इंग्लैड, फ्रास, इटली, स्विजर लैड इत्यादि देश आनन्द से हरे भरे और राजनैतिक स्वत्वों से सींचे गये प्रजापारिजात से नन्दन-वन हो रहे हैं और अतुल एव अटल व्यापार की अपरिमित प्रभुता से इन्द्रलोक को भी इसी ससार में खींच लाने के उद्योग में हैं, तब यह उत्तम जलवायुवाला पहाडी देश क्यों आज भी कुछ नीरसता और शुष्कता धारण किये हुए है? क्यों यहां का शासन

अपने क्षेत्र में हरियाली से नहीं लहलहा रहा है? और क्यों व्यापार-कोकिल का मधुरगान इसके जीवन को सुखमय नहीं बना रहा है? प्रकृति का नियम है कि यदि उसका विकास—उत्पत्ति और पोषण-शक्तियाँ किसी कृत्रिम और अनुचित उपाय से न रोक दी जायँ, तो वह अपने आप प्रत्येक देश और जाति को ऊपर उठाने में—उसे उन्नत करने में—यत्न करती रहती है। स्पेन को भी प्रकृति ने पूरी सहायता दी होती, यदि यहाँ पर कट्टर और भयकर धर्मान्धता ने अपना अड्डा न जमा लिया होता, यदि धर्म के नाम पर मूर्खों की तरह मर कर और असत्य प्राणियों का नाश और अतुल सम्पत्ति का अपहरण कर के इसने और लोगों की शान्ति और उनका सुख लूट कर अपनी शान्ति और अपना सुख भी साथही में न लुटा दिया होता!

यदि स्पेन रोमवासी कैथोलिक मत के जगद्गुरु पोप के बहुत समीप होने से आँखे बन्द किये हुए उसका उपासक बनने के साथ ही अपनी बुद्धि को ठीक रखता, दया को विसार कर धर्म के नाम से अधर्म न करता और ससार के प्राणियों को अपना भाई समझ कर उन पर भयानक रूप से न टूट पड़ता, तो स्पेन में अशान्ति की आग न जलती रहती, उसका सुख न लुट जाता, उसका व्यवसाय-शरीर एक पैर का न रह जाता, उसका साहित्य बिल्कुल निर्बल न होता और आज यह भी ससार के होड़ में उचित वेग से दौड़ता हुआ दिखाई देता। इसी धर्मान्धता के कीचड़ ने स्वतन्त्रता के बहते हुए साफ पानी को गँदला कर

दुर्गन्धियुक्त कर दिया, जिससे कि सारे स्पेन का वायुमण्डल जर्मनी एवं इंग्लैंड के समान आरोग्यवर्धक नहीं दिखाई देता है।

यहाँ पर चौदहवीं शताब्दी तक तो विदेशियों के आक्रमण होते रहे और उसके बाद आन्तरिक समर की अविश्रान्त खटपट ने कानों के पर्दे फाड़ दिये। यह उचित था कि कम से कम फर्डीनैंड एवं इसाबेला (१४७९-१५१६) के समय से तो यहाँ पर शान्ति का स्थापन करके लोग देश-कल्याण के उपाय सोचते, परन्तु ठीक उसके विरुद्ध उसी समय से कैथोलिक मत के सिवा और मतवालों का सर्वनाश करने के लिए "इन्क्विज़िशन" नामक प्राण संहारक न्यायालय (या अन्यायालय?) की स्थापना की गई। यह प्राणघातक यन्त्र धर्मान्धता का पहला औरस सन्तान था, इसने दिनों दिन अपना सिर ऊँचा किया और शिव जी के तीसरे नेत्र की तरह जिधर दृष्टि उठाई उसी तरफ अपनी प्रचंड ज्वाला से सभी को भस्म कर दिया। इस घोर अत्याचार के होते हुए भी प्रकृति देवी की कृपा से स्पेन को उन्नति प्रसाद कुछ कुछ मिलता रहा और सुअवसर पाकर चार्ल्स प्रथम (१५१६-५८) के राजत्वकाल में यह देश सारे योरोप का सिरताज बना। क्या शक्ति, क्या धन और क्या विद्या सभी बातों में यह उस समय बढ़ा चढ़ा था—यही समय यहाँ का स्वर्णकाल कहा जाता है।

यदि अब भी इस देश ने आँखें खोलकर अपनी निर्दयता और धर्मान्धता पर पछतावा किया होता, तो यह निस्सन्देह सम्हल जाता और इस के स्वतन्त्रता निर्झर की स्फटिक मणि के समान स्वच्छ जलधारा मलिन न होती, परन्तु यह अपने अभिमान में

चूर था और इसने विवेक से हाथ धो डाले थे। यह अपनी धुन में लगा हुआ था और इस का विचित्र धर्म-प्रेम प्राय सभी योरोप को पीडित किये हुए था। हम यह मानते हैं कि योरोप के और देशों में भी धर्म की ओट से पापियो ने दुष्टता की और घोर उपद्रव एव मार काट भी मचाई परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि स्पेन उन सब से बहुत आगे बढा हुआ था।

१५८८ में भयानक नौका समूह या आर्मेडा की तैयारी के समय तक इसका विभव अपने सब से ऊँचे तारे तक पहुँच कर फिर धीरे धीरे नीचे को गिरने लगा जिस "आर्मेडा" को भेज कर स्पेन यह विचार रहा था कि उसके द्वारा अंगरेजों को एकदम चकनाचूर करदे *" उसी की तबाही मानो देश के अध:पतन का मूल-सूत्र बन गई। "आर्मेडा" के सर्वनाश से प्रकृति ने इसके नेत्र खोले, परन्तु तब भी यह आँखे मलता ही रहा और अपनी बेसमझी से पूर्णतया दूर न हुआ—इसमें सन्देह नहीं कि इसी समय से अधार्मिक अत्याचारों में बहुत कुछ कमी पड़ गई थी और फिर काल पाकर ये शान्त भी होगये, परन्तु जब मौका हाथ से निकल जाता है, तब कुछ बनाये नहीं बनता। जो मनुष्य पहले ही से सचेत हो जाय और अपनी खराबी को ठीक समय पर दूर करदे, वही बुद्धिमान है और वही अपना, अपने देश और अपनी जाति का कल्याण कर सकता है।

घोर धार्मिक अत्याचारों से स्पेन के लोग कुछ कठोर-हृदय और लड़ाकू अवश्य होगये थे, इसलिए उन्नीसवीं सदी में पोप के

*To crush these impudent islanders once for all

भयंकर आडम्बरों की ज्वाला से कुछ दूर होने पर भी ये शान्ति-पूर्वक न बैठ सके। झगड़ा फसाद और लड़ाई टंटा होता ही रहा। यही विशेष कारण है जिससे इग्लैंड एवं जर्मनी के साथ दूसरी ओर तराज़ू में बैठ कर इस देश का पल्ला ऊपर को बहुत ज्यादा उठ जाता है। वर्तमान काल में और देशों को आगे बहुत बढ़ा हुआ देख कर इन्हें भी होश आया और उचित रीति से इन्होंने काम करना शुरू किया है।

आदि से लेकर अन्त तक लड़ते ही रहने का यह फल है कि आज स्पेन में १०० में ६० से भी ज्यादा पुरुष बिल्कुल अपढ़ हैं। जहाँ विद्या ही नहीं, वहाँ और चमत्कारों का नाम तक सुनने में नहीं आसकता। विद्या का फैलाव आदमी चैन से ही बैठने पर कर पाता है। हज़ारों वर्ष तक धर्मान्ध रहकर और शान्ति-रूपी वृक्ष को जड़ से उखाड़ और फेंक कर, इस देश ने अपनी सब समृद्धि गँवादी और अब अपनी प्रचण्ड मूर्खता के बुरे परिणामों से अपने स्वत्वों को परिमित, शासन प्रथा को अनुन्नत, धर्म को निर्दयता मालिन्य, विद्या को स्वल्प और व्यवसाय को निर्बल देखकर इसे सूझी है कि हमें भी संसार में शक्तिमान् बनना चाहिए, नहीं तो विकास सिद्धान्त के अनुकूल एक न एक दिन जल्दी ही दुनिया से मारे और कुचिले जाकर मिट जाना पड़ेगा—यहाँ तक कि नामो निशान भी न बाकी रहेगा।

हम भारतवासियों के लिए स्पेन का इतिहास एक बढ़िया उदाहरण है। क्या हमारे हिन्दू और मुसलमान भाई, सनातनधर्मी और आर्य समाजी, ईसाई और जैनी इत्यादि इस इतिहास को पढ़ कर भी धर्म के नाम से लड़ाई लड़ने और शास्त्रार्थ करने का

स्वभाव एकदम न छोड देंगे ? क्या स्पेन की दशा को देख कर आज भी कोरी विवादशीलता में अपना समय नष्ट करने का साहस उन्हें होना चाहिए ? क्या अब भी अपने वार्षिक अधिवेशनों के समय धर्म का डंका बजाकर हमें शंका-समाधान के बहाने से अपने अन्य मतावलम्बी भाईयों का उपहास करते हुए सचमुच अपना ही उपहास करना चाहिए ? क्या इस समय भी इस बात की ज़रूरत है कि वे विद्वान् लोग, परन्तु स्पेनवासियों की तरह अदूरदर्शी और धर्मान्ध महात्मा जो उपदेशक होने का व्रत धारण करके अपने और भाइयों की दिल्लगी उडाना ही अपनी विजय और अपना परम कर्तव्य समझते हैं, अपने उसी अनुचित काम में लगाये रक्खे जायँ ? क्या विवादशीलता को बढा कर हम भाई से ही भाई को पवित्र धर्म का नाम लेकर नहीं लडा रहे हैं ? क्या हमारे धार्मिक वार्षिक अधिवेशनों की वह त्रुटिपूर्ण प्रथा, जो विवाद की आग को भडकाती और उपहास के विष को फेलाती है, पूरे तौर से शोचनीय नहीं है ? क्या इस धर्म के नाम से बेसमझी के कामों में पड कर अपने ही पैरों पर अपने आप कुल्हाडी चलाना हमारे लिए उचित है ? क्या ऐसे "धर्मोपदेश" पर हमें वह द्रव्य नष्ट करना चाहिए जो हम अनायास विद्या के प्रचार में व्यय कर सकते हैं ? और क्या हमें आँखें खोल कर अब भी यह न विचारना चाहिए कि अपना अमूल्य समय, परिश्रम से कमाया हुआ धन और थोडी सी बची हुई शक्ति यदि हम धर्म के नाम से विवादों में न खोकर प्रति वर्ष कम से कम दो चार ही नये स्कूल जिनमें शिक्षा मुफ़्त दीजाती हो खोलना शुरू करदें, तो हम अपना परमकल्याण कर सकते हैं ?

इन सब प्रश्नों का हमें विश्वास है हमारे शिक्षित भाई पूर्ण-तया मनन करेंगे और उचित रीति से काम करके अपने को सब तरह से उन्नतिशील बनावेंगे।

हम चाहते हैं कि मनुष्य धर्मपरायण और धर्मभीरु हों न कि धर्मदम्भी और धर्मान्ध—ये उसे अपनी उन्नति का सच्चा सहायक और उत्तम बल बनावें न कि अवनति को खुला रास्ता और निर्दयता का सचारक। सच्चा धर्मात्मा पुरुष वही है जो अपना कर्तव्य उचित रीति से पालन करते हुए अपने देश हित और जाति हित के विचारों में तन्मय हो जाता है। समय अब भी हमारे हाथ में है। हमारे पास धन और शक्ति भी है, उधर न्यायपरायण अंगरेज सरकार सहायता करने के लिए हमारी पीठ पर हाथ रक्खे हुए है और सब तरह से विद्याप्रचार में सहायता दे रही है। यदि इस पर भी हम न चेते तो किस का दोष है?

भारतवर्ष के लिए वर्तमान समय उस की परीक्षा का है। यदि वह चाहे तो पूर्ण उन्नति कर सकता है पर जरा सा भी बिगाड होने से फिर रसातल तक हम लोगो का पता न लगेगा। यह कभी न सोचना चाहिए कि साधारणतया हँसी मसखरापन के साथ आर्य्य समाजियो और सनातनधर्मियो का १० मिनट का शास्त्रार्थ बहुत ज़्यादा प्रभाव नहीं रखता, थोडी सी भी बात का अन्त में हमारे भाग्य और हमारे देश और जाति पर बडा भारी असर होता है। यदि हमें भारतवर्ष की उन्नति सच्चे हृदय से करनी है, तो हमें आपस के सब झगडे बिल्कुल छोड कर एक छोटे से भी छोटा काम और छोटी से भी छोटी बात सर्वदा इसी पवित्र विचार के

साथ सोच समझकर करना या मुँह से निकालना चाहिए कि वह हम सब को वास्तव में जन्मभूमि को उन्नत बनाने में सहायता दे सके न कि उसे और भी अधिक गिरा दे। इस अवस्था में सब झंझट छोड कर विद्या को अपनी शक्ति भर फैलाने का यत्न करना प्रत्येक भारत-सन्तान, हिन्दू, मुसलमान या ईसाई का परम पवित्र कर्तव्य है। प्रत्येक भारतवासी को शिक्षित करके ही हम अपने देश एवं जाति का सिर ऊँचा कर सकते हैं, तभी हमारी सच्ची उन्नति होगी, तभी हमारा सच्चा कल्याण होगा और तभी हमारा खोया हुआ गौरव फिर पूरे तौर से हमारे हाथ लगेगा—अस्तु।

इसके बाद यथासम्भव शीघ्र ही "अमेरिका की संयुक्त रियासतो* के इतिहास" को प्रकाशित करने का निश्चय हो चुका है। उसे विशेष रूप से रोचक एवं उपयोगी बनाने के लिए अमेरिका-वासियों के ही द्वारा लिखी हुई कई एक गौरव-पूर्ण पुस्तकों का भी अवलोकन किया जायगा।

सीतापुर अवध
शनिवार कार्त्तिक शुक्ल ३ सं० १९७०
ता० १ नवम्बर १९१३

सोमेश्वरदत्त शुक्ल।

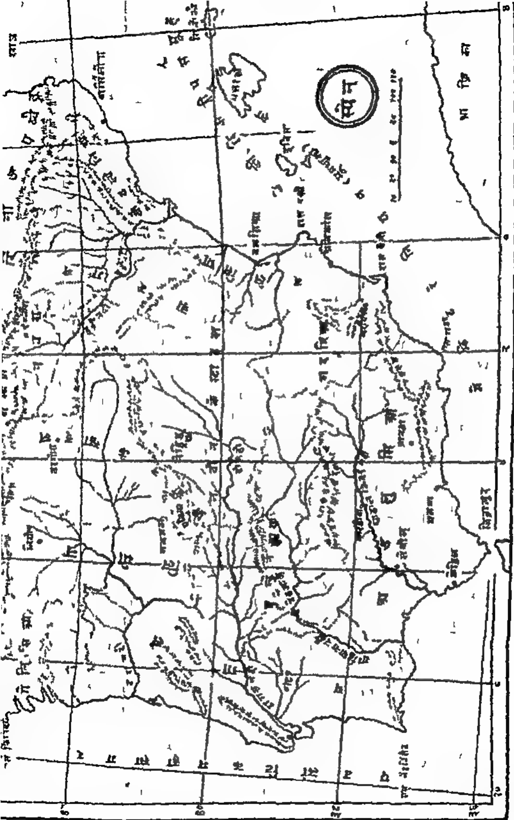
* United States of America

स्पेन का इतिहास

१—भौगोलिक वृत्तान्त।

स्पेन योरोप के दक्षिण पश्चिम भाग में एक प्राय पहाड़ी देश है। विस्तार में यह अपने यहाँ के सम्मिलित सूबा बंगाल और आगरा के समान है, बम्बई के हाते के प्राय बराबर इसकी जन संख्या १,९५,८८,६८८ है। स्वयं स्पेन का क्षेत्रफल १९००५० वर्ग मील है और अपने केनारी और बेलीरिक द्वीपों को मिला कर यह १९४,७८३ वर्ग मील है। पहले यह भूमि १३ सूबों में बँटी हुई थी। सन् १८३३ से यह ४९ प्रान्तों में विभक्त कर दी गई, जिनमें से ४७ खास स्पेन में हैं।

स्पेन तीन तरफ प्राकृतिक सीमा से घिरा हुआ है। इसके उत्तर में बिस्के की खाड़ी और फ्रांस, दक्षिण में मेडिटरेनियन समुद्र, पूर्व में मेडिटरेनियन समुद्र तथा फ्रांस, और पश्चिम में पुर्तगाल है। इसका उत्तरी किनारा बहुत ऊँचा पथरीला और ऊबड़ खाबड़ है। इससे वहाँ अनेक खोह और कन्दरायें बनी हुई हैं, जो कि अच्छे और सुरक्षित बन्दरगाहों का काम देती हैं। इसके पश्चिमी किनारे का दृश्य अपूर्व है, वह जिब्राल्टर तक चिपटा, फिर रासपलो तक पहाड़ी, उसके बाद नीचा, और इसी भांति



है। यहाँ के खास शहर मैड्रिड (राजधानी), वारसिलोना, वेलेंशिया, अलीकात, सेवील, मलागा, कारडोवा, ग्रेनडा, टोलेडो, सैलामाका, सरगोसा, केडीज, जिब्राल्टर और अल्मेदन है।

२—मनुष्य-चरित्र एवं अन्य वातें।

किसी स्थान के निवासियों का स्वभाव वहाँ के जलवायु तथा स्थान-सबधी वातो पर विशेषतया निर्भर होता है। स्पेन के पहाड़ी मुल्क होने के कारण इस में आने जाने का सिलसिला कठिन है, इसलिए भीतरी स्पेन के लोग वाहरी एवं किनारे पर के निवासियो से अपरिचित से रहते हैं। ऐसे ही ज्यों ज्यों अदर जाइए, त्यो त्यो सभ्यता की मात्रा घटती हुई मिलेगी। कुछ लोग पहाडी और जगली हैं। तट पर के निवासी सब तरह से वाहरी दुनिया से सबध रखते रहे हैं, इसलिए उनकी प्रकृति में सदैव परिवर्तन होता रहा। ये लोग सीधे और सभ्य हैं। स्पेन देश के लोग प्राय. गभीर, घमडी एव आलसी होते हैं। ये लैटिन और अरवी के मेल से वनी हुई भाषा वोलते हैं।

यहाँ की खेती की हालत हमारे भारतवर्ष से वहुत कुछ मिलती है। सन् १८७७ में यहाँ के ७२ फी सदी आदमी इसी पेशे पर निर्भर थे। पहले के देखते यहाँ की उपज कम हो गई है, यहाँ के औजार वहुत भद्दे होते थे, पर अव खेती के लिए नई कलो का प्रचार होने लगा है। लोग काश्तकारी पर अव विशेष ध्यान देते हैं। ये खेती वहुधा तालावो के निकट करते हैं, वहाँ पर अच्छी

सिरे तक ऊँचा नीचा चला गया है। इस ओर अच्छे बंदरगाहों का अभाव है। पीरिनीज पहाड़ की श्रेणी स्पेन को फ्रांस से अलग करती है।

स्पेन का मध्य भाग बड़ा उच्च समस्थल है। एक पहाड़ी से इसके दो भाग हो गये हैं। उत्तरी भाग समुद्र की सतह से २७०० और दक्षिणी २६०० फीट ऊँचा है। स्पेन की शेष भूमि का भी दृश्य अनोखा है। कहीं सफेद कोह की भांति ऊँचे बर्फ से ढकी हुई चोटीवाले पर्वत हैं, जिनके समीप में नीचे बहुधा उपजाऊ और लंबे चौड़े मैदान होते हैं, और कहीं उभड़े हुए समस्थल हैं जिनमें कुछ बिलकुल उजाड़ और कुछ आबाद हैं, जहाँ खेती भी होती है और नहरें बह रही हैं।

कैंटाब्रियन, पीरिनीज और सीरा नेवादा यहाँ के विख्यात पहाड़, टागस, ग्वाडियाना, डयूरो, इब्रो तथा ग्वाडलक्विवरा नदियाँ और अलबुफेरा, मारमेन एवं लगुनादलाजंडा झीलें हैं। इन ऊँचे पहाड़ों एवं नीचे मैदानों के कारण स्पेन का एक भाग दूसरे भाग से प्राय किसी बात में समानता नहीं रखता अर्थात् पृथक् पृथक् स्थानों की पृथक् पृथक् पैदावार और जल वायु है। उत्तर तथा उत्तरी किनारे की आब हवा तर है। वहाँ वर्षा बहुत होती है। उच्चसमस्थल मेसेटा की आब हवा बहुत विकट है और वहाँ वर्षा बहुत कम होती है। पूर्वी व पश्चिमी किनारों पर मेडिटरे-नियन समुद्र का असर है।

इसी भाँति प्रत्येक स्थान की पैदावार भी अलग अलग है। मेसेटा में वृक्ष होते ही नहीं और इसपार्टो नाम की घास विशेषतया उगती।

है। यहाँ के खास शहर मैड्रिड (राजधानी), बारसिलोना, वेलेंशिया, अलीकांत, सेवील, मलागा, कारडोवा, ग्रेनडा टोलेडो, सैलामाका, सरगोसा, केडीज, जिब्राल्टर और अल्मेदन हैं।

२—मनुष्य-चरित्र एवं अन्य बातें।

किसी स्थान के निवासियों का स्वभाव वहाँ के जलवायु तथा स्थान-संबंधी बातों पर विशेषतया निर्भर होता है। स्पेन के पहाड़ी मुल्क होने के कारण इस में आने जाने का सिलसिला कठिन है, इसलिए भीतरी स्पेन के लोग बाहरी एवं किनारे पर के निवासियों से अपरिचित से रहते हैं। ऐसे ही ज्यों ज्यों अंदर जाइए, त्यों त्यों सभ्यता की मात्रा घटती हुई मिलेगी। कुछ लोग पहाड़ी और जंगली हैं। तट पर के निवासी सब तरह से बाहरी दुनिया से संबंध रखते रहे हैं, इसलिए उनकी प्रकृति में सदैव परिवर्तन होता रहा। ये लोग सीधे और सभ्य हैं। स्पेन देश के लोग प्रायः गंभीर, घमंडी एवं आलसी होते हैं। ये लैटिन और अरबी के मेल से बनी हुई भाषा बोलते हैं।

यहाँ की खेती की हालत हमारे भारतवर्ष से बहुत कुछ मिलती है। सन् १८७७ में यहाँ के ७३ फी सदी आदमी इसी पेशे पर निर्भर थे। पहले के देखते यहाँ की उपज कम हो गई है, यहाँ के औजार बहुत भद्दे होते थे, पर अब खेती के लिए नई कलों का प्रचार होने लगा है। लोग काश्तकारी पर अब विशेष ध्यान देते हैं। ये खेती बहुधा तालाबों के निकट करते हैं, वहाँ पर अच्छी

फसल् भी होती है। ये भूसा आदि खेतो में छोड देते हैं, वही खाद का काम देता है। विशेषतया खाने वाले पदार्थ बोये जाते. जिनमें गेहूँ और जौ मुख्य हैं। जई, राई, ज्वार इत्यादि और भी अनेक अनाज यहाँ पेदा होते हैं।

मटर, लोबिया और सेम फलो में गिने जाते हैं। लहसुन, प्याज इत्यादि यहाँ की खास और प्यारी तरकारियाँ हैं। इसी तरह बैंगन और मिर्च भी चाव के साथ खाई जाती हैं। इनके सिवा रुई, सन और ऊख की खेती यहाँ बहुतायत से की जाती है। जेतून, सेव, केला, नाशपाती, अंजीर, अखरोट, छोहारा, अनार आदि फल भी यहाँ पैदा होते हैं।

घोड़े, खच्चर, गधे, भेड, बकरी, ऊँट इत्यादि इस देश के मुख्य पालू जानवर हैं, यहाँ के पशुओं में घोडे और खच्चर विशेष विख्यात हैं। सरकार घोडे पर भी खेती की तरह ध्यान देती है और उनकी नस्ल की रक्षा करती है। यहाँ मधु मक्खी और रेशम के कीडे भी पाले जाते हैं।

धातुओं की अधिकता में योरोप का कोई और देश इससे समता नहीं कर सकता। यहाँ सोना, चाँदी, पारा, ताँबा, सीसा, लोहा, नमक, कोयला इत्यादि (इनमें भी विशेषतया नं० २ ३ एव ४) बहुतायत से पाये जाते हैं।

शराब, अंगूर, किशमिश, मछलियाँ, जैतून का तैल, शकर, ऊन, रेशम, रुई, सोना और चाँदी स्पेन अपने यहाँ से अमेरिका एव फ्रांस इत्यादि देशों को भेजता है।

३—प्रारंभिक इतिहास और रोम का राज्य।

स्पेन क्या था और कैसा था यह पहले कोई नहीं जानता था। मेडिटरेनियन समुद्र के किनारे की भूमि को यूनानी लोग आइबेरिया कहते थे। उसका आंतरिक भाग उनके लिए एक आश्चर्यजनक भूखण्ड था। कहा जाता है कि हरक्यूलीज़ के चिह्न वहां मौजूद हैं। समुद्र के किनारे पर दो शिलायें हैं जो "हरक्यूलीज़ स्तम्भ" के नाम से विख्यात हैं। यूनान देशवाले इसे पृथ्वी का अंत समझते थे। हरक्यूलीज़ यूनानियों का युद्ध देवता था। यहां पहले पहल फिनीशियन लोग आये जो कि एशिया माइनर के व्यापारी थे। ईसा से लगभग ७०० वर्ष पूर्व इन लोगों ने यहां एक आध गांव बसाये। इसी समय यूनानियों से इनका प्रथम परिचय हुआ। इन विद्वानों ने स्पेन के भूगोल को जानने की चेष्टा की, पर उसका ठीक ठीक पता प्रथम प्यूनिक संग्राम से चला।

ईसा से प्राय २५० वर्ष पूर्व अफरीका के कार्थजवासियों ने आइबेरिया पर अपना आतंक जमाया, हेनिबाल के पिता हैमिलकर बारकर ने यहां प्रभुत्व और सुअवसर देख स्पेन में एक कार्थेज राज्य स्थापित करना चाहा। इस विचार से यह बिना अपनी सरकार की मदद के जिब्राल्टर के पार उतर गया। इस साहसी मनुष्य ने बहादुर स्पेनियों की एक सेना बनाई। इनकी सहायता से उसने अपने राज्य को स्पेन के मध्य भाग में फैलाया।

इसने उनको सच्चा अनुयायी बनाने के लिए अपने फौजी जवानों के विवाह वहाँ की युवतियों से करा दिये और स्वयं अपने पुत्र हैनिबाल का व्याह एक स्पेन की रमणी से किया। इन बातों से वह स्पेनियों का प्रेमपात्र बन गया। ईसा से २८८ वर्ष पूर्व इसका कालान्त हुआ। इसके बाद सात वर्ष तक इसका दामाद हेस्डुबाल राज-काज करता रहा। इस राज्य और रोम राज्य की सीमा इस समय इब्रो नदी थी। अनन्तर हेनिबाल ने पूरे दो वर्ष युद्ध करके समस्त जातियों को जीत लिया, और स्पेन भर में अपना अकंटक राज्य स्थापित कर दिया।

अब दो सेनापति जो भाई भाई थे प्रथम बार रोम की फौज लेकर स्पेन में आये। छ वर्ष तक घोर युद्ध होने के बाद दोनों भाइयों की हार और मृत्यु होगई। २१० बी० सी० में छोटे भाई के ज्येष्ठ पुत्र एफ्रिकेनस ने नये कार्थेज को ले लिया। इसने शत्रु-मंडली को निर्बल करके पाँच ही वर्ष में उसे स्पेन से मार भगाया।

स्पेन के दक्षिणी लोग कुछ सीधे और सभ्य थे, इसलिए वहाँ वास्तव में इनका कुछ प्रभाव हो गया, लेकिन भीतरी देश के वासियों पर शासन जमाना कठिन था, क्योंकि एक तो देश ही जंगली और पहाड़ी था और दूसरे वहाँ के लोग लड़ाका होते थे। ये आन्तरिक स्पेन के निवासी सेल्टिबरी या केल्टिबरी कहलाते थे, ये लोग विश्वास घाती और उत्पाती होते थे। ये कभी रोम के सहायक बनते और कभी उसके शत्रु, इस भांति ये अनेक उपद्रव मचाते और रोम के नाकों दम रखते थे। रोम दो जातियों का परस्पर मित्र भाव नहीं देख सकता

था। केल्टिबेरी जाति ने १९५ बी० सी० में बलवा कर दिया। रोमी गवर्नर ज्येष्ठ केटो ने इनको पछाड़ा और इनसे सब हथियार ले लिये तथा सब किलों के तोड़ दिये जाने का हुकम दे दिया।

ग्रेक्ची पूर्वी स्पेन का शासक था। इस के पिता ग्रेकस ने ११९ बी० सी० में केल्टिबेरी जाति से युद्ध ठान दिया। इसने अपनी विजय धारा के प्रवाह में १०३ नगर छीन लिये और करीब करीब पश्चिमी हद्द तक इसका डङ्का बज गया। यह जैसा युद्ध में वीर था वैसा ही नीति में निपुण था। यह प्रजा का शुभचिन्तक एव दयाशील भी था। जब यह पुर्तगाल के समीप पहुँचा, तब वहाँ इसकी दाल न गली। इधर एक जगह के जीतने पर ज्यों ही यह दूसरी ओर मुँह करता, त्योंही वह स्थान हाथ से जाता रहता था। बी० सी० १५४ में रोम ने यहाँ एक बुरी शिकस्त खाई। केल्टिबरी ने भी इस समय रोम को बेदम समझ अपना हाथ साफ किया। इन्होंने एक नगर के समस्त रोमनिवासियों को एक साथ ही कत्ल कर दिया। क्लाडियस मारसलेस ने बी० सी० १५२ में इसका बदला लिया। इसका बर्ताव प्रजा पर बहुत असन्तोषजनक था। शायद उपर्युक्त त्रिकट निर्दयता ही इसका कारण थी। नवीन शासकों के अनुचित और असह्य अत्याचार के कारण स्पेन की प्रजा का प्रकोप फिर प्रचण्ड हुआ। केल्टिबरी की सहायता से प्रजा ने सात साल तक रोम की सेना को खूब काटा और मारा। यह जान पड़ता था कि रोम का अस्त होने वाला है। एक समय

प्रजा ने रोम के एक सर्दार से वचन ले लिये थे कि रोमनिवासी इस प्रांत में अब शासन करने का विचार न करेंगे, पर केल्टिबरी ने अपने सरदार के साथ विश्वासघात किया और उसे दुश्मन के हाथ दे दिया।

बी०सी० १४१ में रोमियों ने इनके प्रधान नगर एव दुर्ग को घेर लिया, परन्तु साल भर पड़े रहने से इनकी फौज नष्ट और हताश होने लगी। भोजन तक का मिलना मुश्किल था, तब ये लोग अपने असहाय और रोगी साथियों को छोड़ कर भाग गये। रोम के लिए यह बडी लज्जा की बात थी। फिर भी बी०सी० १३३ में छोटे सीपियो ने उक्त स्थान को ले लिया और जनियस ब्रूटस ने पश्चिमी प्रांत को जीत लिया।

अब बहुत समय के लिए रोम को निष्कटक राज्य मिला और उत्तरी भाग को छोड जो इनके अधिकार में नहीं था, शेष स्पेन में शांति फैलने लगी। कई नये नगर बसाये गये। लैटिन स्पेन वालो की भाषा हो रही थी, और वाणिज्य में वृद्धि होने लगी। अब सरकारी प्रबन्ध ठीक था। चोरों, डाकुओं और समुद्री लुटेरों से रक्षा के उपाय किये गये। इस सब शांतिमय सुख-सगठन का यदि असली कारण देखा जाय तो वह रोमवालों का सुप्रबन्ध था। ये प्रजा के साथ मित्रता और प्रेम का वर्ताव रखते थे। किसी किसी शहर को तो रोम के सिक्के बनाने का भी हक मिल गया था। ये प्रजा से बँधा हुआ लगान और फौजी काम लेते थे। इन दो बातों के सिवा स्पेन को किसी तरह की अडचन

न थी, और प्रजा पूर्णरूप से प्रसन्न थी। हर तरह से उन्नति हो रही थी, परन्तु ये बाते वास्तव में मेडिटरेनियन समुद्र के किनारे ही के शहरों में थीं।

बी० सी० १०५ में फिर रोमियों पर हमला हुआ। दो रोमी सर्दारों की फौजें जड़ से साफ कर दी गई। स्पेन में बड़ी निर्दयता से लूट मार हुई। रोम के लोग बहुत घबड़ा गये थे पर केल्टिबरी इनके सहायक हुए।

बी०सी० ९७-६ में केल्टिबरी का भी रोमियो पर प्रचण्ड आक्रमण हुआ। सेरटोरियस केल्टिबरी जाति का सरदार था। यह हेनिबाल की टक्कर का नामी आदमी था और सात साल तक वीर सैनिकों का मोर्चा मारता रहा। देश की स्वतन्त्रता इस का मूल मन्त्र था जो इस ने प्राप्त भी करली थी। यह बड़ा साहसी और चतुर था। इस ने स्पेनियो के चित्त को खींच कर उनको अपनी मुट्ठी में कर लिया था। इस के युद्ध से रोम का धन एवं पराक्रम बहुत कम हो गया। बी०सी० ७१ में पाम्पे ने स्पेन को फिर जीत कर अपनी हार का धब्बा धो डाला। अब की बार कठोरता से शासन शुरू किया गया और स्पेन को वह स्वाधीनता नहीं दी गई। दश वर्ष पश्चात् सीज़र महान् ने पश्चिमी स्पेन की ओर मुँह किया, और विजय करने के विचार से प्रस्थान भी कर दिया। पर अन्य कारणों से उस समय इसे अवकाश न मिला। बी०सी० ४९ में पूर्वी स्पेन में आपस की फूट

के कारण इस को वहाँ जाना पडा और पाम्पे के सरदारों से लडकर इसने विजय प्राप्त की। चार वर्ष बाद इसने फिर पश्चिम की ओर प्रस्थान दिया। कारडोवा के समीप शत्रुवृंद को परास्त करके यह राजा बना।

महाराज आगस्टस ने उत्तरी भाग पराजित करने का बीडा उठाकर बी०सी० २७ में इस भाग पर हमला किया। नगरों एवं ग्रामों को जीतता हुआ और विजित स्थानों में अपने फौजी जवान छोडता हुआ यह दूसरे तट पर पहुँच गया। इसने अपने सचिव की सहायता से आठ साल में पूरी विजय प्राप्त की। उस समय बहुतेरे नगर इसी के नाम से बसे थे।

अब ४०० वर्ष तक यहाँ कुशल और शांति रही। २५६ ई० में पूर्व की ओर से इस राज्य पर एक आक्रमण हुआ। इसके सिवा और कोई ऐतिहासिक युद्ध नहीं हुआ। इस समय में सरकारी प्रबन्ध में बहुत कुछ परिवर्तन हुए।

४—रोम का अस्त तथा गाथ लोगों का उदय।

चौथी शताब्दी के अंत में रोम की स्पेनदेशीय रियासत खूब फली फूली थी, परन्तु पाँचवीं सदी के आरम्भ ही से इस पर आक्रमण होने लगे। ४०९ ई० में उधर अलरिक ने रोम को लूट लिया और इधर जर्मनी की ओर की जंगली जातियों ने स्पेन पर　　से लूट मार की। स्पेन जैसी　　उतनी ही बरबादी उस

पर आई। ४०९ से ४१३ तक स्पेन और फ्रांस में बहुत कुछ उलट फेर होते रहे। इसी समय कांटेस्टाइन नामक सरदार ने जबरदस्ती अपना कब्ज़ा इस पर करलिया। शीघ्र ही इसके एक जंगी सिपह सालार जिरोंटियस ने बलवा किया और इससे राज्य को छीन लिया। कुछ समय बाद इसकी भी वही गति हुई। फ़ौज बाग़ी हो गई। यह कुछ सिपाही लेकर स्पेन में जा छिपा। आधी रात के समय बाग़ी लोग इस पर चढ़ आये और उन्होंने इसके मकान को घेर लिया। इसके थोड़े से वफ़ादार आदमियों ने घोर सग्राम करके तीरों से ३०० बाग़ियों को मार डाला। ऐसे ही लड़ने का सामान समाप्त हो गया। यह अपनी प्यारी पत्नी को छोड़ कर भाग न सका। तब चारों ओर से मकान में आग लगा दी गई। इस पर इसने आत्मघात का विचार किया। उसकी वीर धर्मपत्नी ने कहा कि मैं आपके बाद इस संसार में क्लेश और लज्जा की पात्र बनना नहीं चाहती। ऐसा कहकर उसने अपना कंठ पति के कुठार पर रख दिया, पति भी कटारी मार के मर गया।

४१४ में अटौलफ़स जंगली जातियों से सामना करने को स्पेन पहुँचा। यह पश्चिमी गोथ वंश का था, जो कि बाल्टिक के किनारे पर जर्मनी के उत्तर में रहता था। अटौलफ़स युद्ध करने के पूर्व ही चल बसा। ४१५ में वेलिया गद्दी पर बैठा। यह युद्धप्रिय और लालची था। इसने रोम के बादशाह होनोरियस से सलाह कर के तीन वर्ष में उपर्युक्त जंगली जातियों को परास्त

कर के निकाल दिया। अब स्पेन रोम के अधिकार में नाममात्र को रह गया।

इन गोथ लोगो का शासन स्पेन में प्राय. ४१८-७११ ईसवी तक रहा। टूलूज़ इनका राजगृह था और टोलेडो इनकी राजधानी थी, इनका रोम से कभी भाई का, कभी नोकर का और कभी शत्रु का भाव रहता था। सो वर्ष तक इनके राज्य की जड कमजोर रही। इसका कारण उत्तरी जंगली जातियो का बल था। इन्हीं के समय में ईसाई मत फैला। ये कैथोलिक मतावलम्बी थे। रोम का पोप इनका धर्मगुरु था। स्पेन का इस मत का सब से अधिक पक्षपाती होना यहाँ की अनेक ऐतिहासिक बातो का मूल कारण हुआ। इस समय तक स्पेन में साहित्य कुछ भी न था। यूनानी दर्शनशास्त्र दक्षिण में सब से बढ़कर शिक्षा की श्रेणी समझा जाता था।

वेलिया के समय में राज्य स्थायी न हुआ था। सन् ४२८ में स्वुवी और वँडल जातियो ने रोम और गाथ की मिली हुई फौज को नष्ट करके और उत्तर से दक्षिण की ओर लूटते मारते एव अच्छे अच्छे शहर बरबाद करते हुए एफ्रिका में पदार्पण किया। ये जातियाँ जब तक जीवित रहीं, तब तक इन्होंने दक्षिण स्पेन के सभ्य वासियो के नाको दम रक्खा। इन दीन लोगों की प्राथना पर रोम से गाथिक-नरेश थियोडोरिक द्वितीय स्पेन भेजा गया, यह एलेरिक का पोता था, इसने ४५६ में पीरिनीज पार कर स्वुवी लोगों को परास्त किया। अब स्वुवी केवल गेलेशिया ही

में रह गये और वह सूबा भी गाथ के मानहत था। इस नरेश का यहां प्रवेश मानो रोम का स्पेन से हाथ धो बैठना था। यह स्पेन का राजा बन बैठा और धीरे धीरे अपनी रियासत बढ़ाता रहा।

इसके पीछे ४६६ ई० में इसका भाई यूरिक गद्दी पर बैठा। शायद इसने थियोडोरिक को विष दे दिया था। यह रोम से बिलकुल अलग होकर स्वतन्त्र बन गया। इस वीर पुरुष ने पश्चिमी सिरे तक विजय करके अपना झंडा फहरा दिया। इसने यहां कानून स्थिर किया और इसके पीछे २० वर्ष बाद एलिरिक द्वितीय गद्दी पर बैठा। इसने उस कानून को सब भागों में पूरा किया और रोम की शासन-प्रथा का प्रचार किया।

लियोनिफ़िल्ड ही के समय में यहां ईसाई मत का प्रवेश हुआ। लगभग ५०० ई० के प्राय सारी प्रजा ने इस मत को सहर्ष स्वीकार कर लिया, परन्तु राजा व रानी ने ऐसा नहीं किया, और अपना एरियन मत स्थिर रक्खा जिसके अनुसार ईसा मनुष्यों से श्रेष्ठतर, परन्तु ईश्वर के सामने महा तुच्छ समझे जाते थे।

हरमेनेगिल्ड राजा का ज्येष्ठ पुत्र था। अपनी नव विवाहिता पत्नी के साथ उसने रोमन कैथोलिक मत ग्रहण किया। इस पर इसके माता पथ पिता इन दोनों के साथ बहुत बुरा बर्ताव करके इनके परलोकवास के कारण हुए। इस अत्यन्त क्रूर कर्म के अमिट कलक में सनकर लियोनिफ़िल्ड सन् ५८६ में चल बसा।

इसका द्वितीय पुत्र रिकार्ड गद्दी पर तीन वर्ष के लिए बैठा। यह पहला ईसाई राजा था। इसके समय में मजहबी जोश खूब फैला। यह पुराना मत नाश करने और कैथोलिक मत फैलाने पर उद्यत हुआ। यह सब को अपने मत में अपनी भांति कट्टर बनाना चाहता था। इसने सैरियन लोगों की धर्म पुस्तकें भस्म करवा दीं और उनके पुजारियों एवं पुरोहितों को भी धमकाया। इस कट्टरपने से उसके धर्मगुरु पोप तो प्रसन्न हुए पर यहूदी लोगों पर तबाही आई, जिसके कारण अनेक उपद्रव उठ खड़े हुए।

गाथवंश में धीरे धीरे राजबल बहुत मन्द पड़ गया था। इनके समय में युवराज नियत होने में प्रायः युद्ध हुआ करते थे। धार्मिक अत्याचारों से प्रजा में अशान्ति फैली तथा प्रबन्ध बहुत ढीला हो गया। राजा और प्रजा पहले से ही एक दूसरे को विदेशी समझते थे। यह भाव अत्याचार से अधिकतर प्रबल हो गया। इन सब बातों ने राज्य को और भी तबाह कर दिया। गाथों के अन्तिम काल का इतिहास पूरे तौर से नहीं मिलता है।

५—अरब का आक्रमण तथा ऐतिहासिक वृत्तान्त की कमी।

अफ्रीका के गवर्नर मूसा ने ७१० में लूटने की नियत से एक फौज स्पेन को भेजी। इधर मुल्की फूट तथा निर्बलता के कारण उसके रोकने का कोई प्रबध न हुआ। फौज जिब्राल्टर में

उतरी और लूट मार के बाद लौट गई। स्पेन वालो के इस कुप्रबन्ध को देख कर मूसा ने ७११ में एक फ़ौज तारीक़ के सेनापतित्व में वहां को फिर भेजी। इसने अंतिम राजा राडेरिक को परास्त किया और अपने को वहां का राजा बनाया। इस बात पर मूसा ने स्वयं स्पेन आकर तारीक को क़ैद किया। अन्त में जब इसके बिना काम न चल सका तब उसने इसे छोड़ दिया। उत्तरी भाग को छोड़ कर शेष देश चार वर्ष में जीता गया। मूसा का गुरू खलीफ़ा वालिद इसके इस गौरव को न देख सका और इसे दमसकस वगैरह को बुला भेजा। इसके पहुँचते ही खलीफा की मृत्यु हो गई। सुलेमान की अप्रसन्नता से मूसा को मक्का की यात्रा करनी पड़ी। मार्ग में हताश होकर इसने प्राण त्याग दिये। इसके बाद इसके लड़के अपने पिता के शोक से राज काज ठीक तौर से न चला सके।

मूसा के बाद आधी शताब्दी का कोई पूरा ऐतिहासिक पता नहीं मिलता। कुछ रईस लोग नित नये नरेश बनाये जाते थे और फिर गद्दी से उतारे जाते थे, इनके अध पतन का मुख्य कारण यही है जो हिन्दुस्तान में मुसलमानी राज्य का था। यद्यपि विजयी और पराजित एक ही मत के थे, तथापि जातिभेद से व एक दूसरे से ईर्ष्या रखते थे। हर एक राजा आते ही अपना एक अलग राज्य स्थापित करने का सकल्प कर लेता था। इससे मुल्क कई राज्यों में बँट गया। इस पर भी अफरीका के नरेश का कथन था कि

यह भूमि हमारे पूर्वजों की जीती हुई है, इस कारण से गवर्नर बनाने का अधिकार हमीं को है। उधर खलीफा साहब अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग ही पकाते थे। उनको अपने धार्मिक पद का बल था। वह अपनी ओर से रईस चुनना चाहते थे, बेकार रईस लोग अपने जीवन-निर्वाह के लिए स्पेन के भीतर रियासतें बनाते चले जाते थे।

अब राज्य की दशा बिलकुल खराब थी। परिणाम यह हुआ कि ईसाइयों को अवकाश मिला और उन्होंने भविष्य के लिए एक राज्य की जड़ जमाली। इस भाँति देश में कुछ दिनों में दो राज्य स्थापित हो गये। नये शासन के विचार से प्रजा का बर्ताव पहले बहुत अच्छा था। पुराने अफसरों से सरकारी काम चलता था। किसान खेती का काम करते थे। किसी की रीति-रवाज से कुछ प्रयोजन न था। यहूदी लोग आनंद से वास करते थे। आय तथा कुलीनता के अनुसार उन लोगों से जो "काफिर" मत के न थे खास टैक्स लिया जाता था।

समय के साथ साथ ज्यों ज्यों मुसलमानी राज्य पुष्ट होने लगा, त्यों त्यों वे अपने मत और नियमों को प्रयोग में लाने लगे। औरंगजेब की तरह कई कानून पास कर दिये जिन के अनुसार मुसलमान होना सबके लिए आवश्यक हुआ चाहे वे यहूदी हो या ईसाई। यदि कोई मुसलमान होकर फिर वह स्वयं या कोई उसके वंशवाला अपना मत बदलना चाहता था तो उसे शूली दी जाती थी। इनके सिवा और भी कई एक ऐसी ही बातें थीं, जैसे जो मुसलमान नहीं हैं उनका उच्च सरकारी नौकरियों से वञ्चित रहना

इत्यादि। इन बातो से प्रजा में प्रबल अशान्ति हुई और राज बल दिनो दिन घटने लगा।

६—ओमेद वंश।

इस मुसलमानी राज्य की जर्जर नौका डूबनेही वाली थी कि अब्दुल रहमान नाम के एक वीर रईस ने उसको।उबार लिया। अब्बसिद व श ने इस रहमान के घराने को समूल नष्ट कर दिया था।यह अपने साहस और चतुरता से अपने प्राण बचा सका। लोगों की सहायता से इसने शत्रु वंश से अपना बदला चुकाया और स्वय गद्दी पर बैठा। इसने धर्मगुरु खलीफों से सबन्ध तोड़ दिया। इसका समय विशेष कर मुल्क जीतने तथा वैरियों के उपद्रवों को शात करने में बीता।

७८६ में बलवो से छुटकारा पाके इसने दो वर्ष तक पूर्ण शान्ति से राज्य किया और कारडोवा में एक मस्जिद बनवाई। ७८८ में मरते समय यह अपने तृतीय पुत्र हिसाम को अपना उत्तराधिकारी बना गया।

हिसाम (७८८-९६)। इसके दोनों ज्येष्ठ भाई भी गद्दी के अभिलाषी थे पर इसके सामने उन की दाल न गली। इसने राज्य बढ़ाने का प्रयत्न किया, परन्तु इसे कुछ सफलता न प्राप्त हुई। इसने अपने पिता की मस्जिद को पूरा बनवा दिया और इसलामी शिक्षा का प्रचार किया।

अलहिकम (७९६–८२२)। यह अपने पिता हिसाम के प्रतिकूल था। यह आनन्द भोगने ही को जीवन का सार समझता था और कुरान और रोजा कुछ नहीं मानता था। मुसल्मानों के पुरोहित इस से नाराज रहा करते थे। यह बडा मायावी और निर्दयी था। पुरोहितों (फकीरों) ने अनेक बल्वे किये। टोलेडो में विभ्राट् हुआ उसको इसने शान्त किया। ८०७ में इसने वहां के रईसों को अपने यहां के एक उत्सव में निमंत्रित किया। इन भलेमानसों को इसने एक कमरे में बिठलाया जहां कुछ हथियारबन्द लोग छिपा रक्खे गये थे। इसने उनके द्वारा ७०० मनुष्यों का खून एक दम करा डाला और इस तरह टोलेडो नगर सरदार और मुखियों से हीन हो गया। इसी भांति ८१४ में दूसरी घटना हुई। इसके सिपाही ने एक लोहार को मारा इस पर कारडोवा में गदर मच गया। यह अपनी चतुरता से बागियों के हाथ से निकल गया। वैर को पूरा करने के लिए इसने शहर में आग लगवा दी। बागी तन मन से माल असबाब बचाने में लग गये। इसने धोखे से उसी समय हमला कर के सारे नगर-निवासियों को देश से निकाल दिया।

अब्दुल रहमान द्वितीय (८२२—५२)। यह बडा सीधा और भला आदमी था। इसके समय में मजहबी जोश जोरों पर था। ईसाइयों ने कलह मचा रक्खा था, यहां तक कि वे मुहम्मद पर भी खुले मैदान आक्षेप करने लगे, परन्तु ग्यारह आदमियों को शूली मिलते ही यह गडबड शान्त हो गया।

मुहम्मद (८५२—८६)। यह अपने पुरखों की अपेक्षा कठोर और कम बुद्धिवाला था। इसने मुसल्मानी जोश में टोलेडो के बडे

महन्त को फाँसी देदी। इस प्रकार धार्मिक सहनशीलता उठ गई और इस्लाम धर्म के न मानने वालों के साथ कड़ा वर्ताव होने लगा।

ईसाई राज्य की स्थापना का हाल तो हम अभी कह ही चुके हैं, इस समय एक तीसरा राज्य और स्थापित हो गया। गाथिक घराने का एक मूसा नामक पुरुष उन्नति की इच्छा से मुसल्मान हो गया। उसने क्रमश शक्तिमान् होकर एक तीसरा राज्य अलग स्थापित कर दिया। ८६२ में इसकी मृत्यु होने पर इसके पुत्रों और ईसाईनरेश ने अमीर को बहुत सताया। मूसा के पुत्र ओमर हफसूं का विप्लव भयकर था। इसने अण्डुलेसिया में अपना रोब जमाया था। यह पीड़ित काफिरों की रक्षा करता था, इसका वर्ताव रूजा पर भला था। अमीर की उसके सामने कुछ नहीं चलती थी। अमीर से इसका आतंक कहीं अधिक हो गया। सब लोग बिल्कुल निर्भय रहते और अपना काम करते थे।

मोंधिर (८८६—८८)। यह मुहम्मद का पुत्र था, और बहादुर और वीर था, परन्तु इसका थोड़ा जीवन ओमर के उपद्रव में समाप्त हो गया।

इसके बाद इसका भाई अब्दुल्ला (८८८—९०२) गद्दी पर बैठा। इस समय राज्य में घोर विद्रोह फैल रहा था। अब अरब सरदार भी अलग बिगड़ रहे थे। अब्दुल्ला ने इनसे डर कर इब्न

हफ़सूं को रेज़िओ का राज्य दे दिया, पर शाहशाह की पदवी अपने ही हाथ में रक्खी। परिणाम यह हुआ कि इसके वश के लोग भी इससे नाराज हो गये। अब तो अरब सरदारों की बन पड़ी। अमीर की हिम्मत टूट गई। वे राज्य दवाते ही चले आते थे। राज्य बिलकुल शिथिल दशा में था, परन्तु ८९० में अब्दुल्ला का सितारा फिर चमका। अपनी सेना को बढा कर और उसमें एका पैदा करके इसने इब्न हफ़सू को हराया और राज्य धीरे धीरे उसके मृत्यु काल तक बढता ही गया।

इसका पुत्र अब्दुल्ल रहमान तृतीय (९१२—६१) रईसो में शिरोमणि समझा जाता है। इसने खलीफा का पद प्राप्त किया, देश की बिगड़ी दशा सँभालने के लिए कोष को बढाया और कृषि, वाणिज्य तथा अन्य उन्नतिकारी विभागो को उच्च श्रेणी पर पहुँचा दिया। इसने जहाज और एक उत्तम सेना सजाई जिससे फातिमा वशी लोगो एव उत्तरी ईसाइयो को इसने परास्त किया। फातिमा वश के लोग अफ्रिका में अपना राज्य दृढ कर रहे थे। यह निश्चय था कि ज्यो ही वे इस कार्य को समाप्त कर पावेंगे, त्यों ही वे स्पेन की ओर मुँह फेरेंगे। अब्दुल रहमान ने इनके शत्रुओ से मेल कर लिया और उन्हें सहायता भी दी। इस प्रकार जिब्रा ल्टर का नाका इसने अपने अधिकार में कर लिया।

उत्तर में ईसाई लोग धमकाते चले आते थे। ९१८ में अमीर ने एक उत्तम सेना तैयार की और सेंको, अल्फोंजो तृतीय एव उसके पुत्र आरडोनो ही मैदान में

पछाड़ा, परन्तु फिर भी इन विकट वैरियों का मन कुछ भी न मेला हुआ। ९२१ में आरडोनो द्वितीय अमीर के राज्य में घुस आया। ९२३ में सेंको ने अमीर से विग्यूरा छीन लिया। अमीर का यह सकट शत्रुओं के जीवन के साथ ही समाप्त हुआ। आरडोनो के बाद ईसाइयो की उन्मत्तता कुछ काल के लिए कम हो गई, असहाय होने से सेंको की पत्नी ने खलीफा को सम्राट् मान लिया।

९३९ में यह फिर ईसाइयो में द्वितीय रोमियों से हार गया। ९६० में राज्यच्युत सेंको को अमीर ने लियोन की गद्दी पर बैठाया। इस महान् कार्य के बाद ही ९६१ में यह परलोकवासी हुआ। इसने ऊँचे ऊँचे ओहदे विदेशी स्लाव लोगों को दिये थे, इसलिए अरबी लोग उन पदो से वचित रहने के कारण इससे दिक रहते थे।

अलहकम द्वितीय (९६१–९७६)। यह साहित्यसेवी था। इसके पुस्तकालय में चार लाख पुस्तकें थी, उनमें से बहुतों का इसने अध्ययन किया एवं उन पर टीकाएँ लिखीं या लिखवाई। राजनीति की ओर इसका कम ध्यान था और युद्ध इसे अप्रिय था, यहाँ तक कि सेंशे के सन्धि की प्रतिज्ञा को भग करने पर इसने एक बार युद्ध ठाना, परन्तु शीघ्र ही उससे हाथ खींच लिया।

इब्नअबी-अमीर या अलमंसूर एक राजा के माननीय कुटुम्ब की सतान था। इसे बचपन से यह सुझा दिया गया था कि तेरे भाग्य में राजपद लिखा है। इसने अपनी चतुरता तथा खलीफा-इन सोभ के अच्छे बर्ताव से शीघ्र ही उन्नति की, और अमीर के अन्त समय तक उच्चपद प्राप्त किया। कहा जाता है कि रानी सोभ इसकी उपपत्नी थी।

हिसाम (९७६—१०१३)। यह इस समय १० वर्ष का थ
प्रजा को तत्कालीन मंत्री मुशफी का प्रधान रहना पसद न थ
इसलिए हिसाम का चचा मुघिर मन्त्री बनाया गया। अमीर स्व
मेव यह पद चाहता था। भाग्यवश राजमाता सोभ भी उस
शुभचिन्तक हो गई थी। इससे इसकी मनोकामना फलती च
जाती थी। इसने दूरदर्शिता के साथ ऐसे दाँव पेच ठीक कर रख
थे कि बादशाही इसी के घर का स्वत्व हो जाय।

इसने मुघिर को मरवा डाला। हिसाम नाम मात्र
खलीफा था। मुशफी धन-सम्बन्धी कपट के अभियोग में निका
दिया गया। आमिर ने अबोध खलीफा को एक उत्तम मह
में रक्खा, जो वास्तव में कैदखाना था। उसे कोई शिक्षा न
गई और वह निपट नादान रहा। ऊँचे ऊँचे ओहदे विदेशियो
दिये गये, जिससे राजवशी विद्रोही पुरुष निर्बल हो गये।

९८१ में इसने राविरो तृतीय को एक घोर सग्राम में हराय
और उसके दो परगने ले लिये। अब इसने अपना नाम अलमंसू
रक्खा। ९८५ में इसने केटलोनिया पर चढाई की, जो फरासी
सियो के अधिकार में था। इसने बारसिलोना लूट लिया, ९८
में भयकर धावा करके राविरो की रियासत छीन ली और कि
का विध्वस करवा दिया। केवल विजय-चिन्ह के लिए ए
फाटकमात्र छोड दिया।

इतने में रानी सोम से इसकी अनबन हो गई, और उसने इसके निकाल देने का प्रयत्न किया। सोम ने अपने पुत्र हिसाम को समझा बुझा कर सीधा किया, पर वह पहले ही से हाथ कटा चुका था, क्योंकि उसने अपने सब अधिकार अलमंसूर को लिख दिये थे।

आमिर की चारो ओर विजय हो रही थी और लोग इसके आतंक से थर्राने लगे थे। यह रण-क्षेत्र में कभी नहीं हारा और सभी लोगों के दांत खट्टे करता रहा। इसने पुल और सड़कें भी बनवाई। यह कुछ अध्ययन भी करता था। लोग इसे धर्मप्रिय समझते थे। केवल खलीफा का पद तो इसे नहीं मिला बाकी सब तरह राजसी आनन्द भोग के बाद १००२ ई० में यह परलोकवासी हुआ।

इसके बाद कोई पराक्रमी राजा नहीं हुआ और थोड़े ही समय में अनेक अल्प बुद्धि राजा हुए, जो राज्य के वृक्ष की जड़ को ही काटते चले गये।

अब इसका पुत्र अब्दुल मलिक मुज़फ्फ़र (१००२—८) मंत्री हुआ और कुछ कुछ पिता ही का अनुसरण करता रहा। अनन्तर इसका भाई अब्दुल रहमान उस पद पर नियत हुआ, परन्तु मुसलमान लोग इसे शराबी होने तथा इसकी माता के पहले ईसाई होने के कारण नहीं चाहते थे। इस से यह अन्त में निकाल दिया गया।

अब्दुलरहमान तृतीय के प्रपौत्र मुहम्मद ने इस समय बलवा किया। इस ने खलीफा को क़ैद कर लिया। मुहम्मद

प्रधान मन्त्री के पद से सतुष्ट न हुआ। इसने खलीफ़ा को एक अगम्य कारागार में डाल कर बिल्कुल उसी स्वरूप के एक ईसाई का मृतक शरीर मनुष्यो को दिखा दिया और इस तरह खलीफा की मौत की प्रतीति करवा के इसने अपने को उस पद पर बिठाया।

कट्टर मुसलमान इसके पक्ष में थे, इनके लिए इसने अफ़सरों में अनेक तबदीलियाँ कीं। इस पर जङ्गी जवान बिगड उठे, और उन्हों ने ओमेद वंश के एक सुलेमान नामक पुरुष का झंडा फहराया। १००९ ई० में अलमहदी लड़ाई में हार गया। तब इसने हाशिम को जीवित दिखा के अपना मतलब बनाना चाहा, परन्तु सफलता न हुई। अनन्तर हाशिम हब्स को लौट गया। ईसाइयों की मदद से मोहम्मद फिर एक बार लड़ा, पर फिर भी पराजित हुआ। इस बीच हब्स से लौट कर हाशिम गद्दी पर बैठा और मोहम्मद राजा के सामने मारा गया, परन्तु १०१३ में सुलेमान ने राज्य छीन लिया और पराजित राजा कहीं चला गया।

अब सुलेमाम(१०१३—१६) खलीफ़ा हुआ। लोग इससे अप्रसन्न थे। इधर उधर के शासको ने अपने अधिकार बहुत कुछ ...ये। स्लाव जाति के विदेशी राज्य कर्मचारी इसके शत्रु थे। अली का दामाद अलीहमूद और खैरखां इस से लडने को उद्यत हुए। बेरबेर जाति स्वदेशानुराग के कारण सुलेमान की शत्रु और अली की सहायक हो गई। १०१६ में सुलेमान राज्यच्युत हुआ। १०१७ में किसी ने स्नान करते समय उसे मार डाला।

अब अली खलीफा और खैर खां प्रधान मंत्री हुआ। खैर खां इस बात से भी असंतुष्ट रहा। वह ओमैद वंशी राजा होना चाहता था, इसलिए उसने अब्दुल रहमान तृतीय के पौत्र अब्दुल रहमान चतुर्थ (१०१७-२३) को गद्दी पर बिठाया। इस के पाँचों वर्ष अली के पुत्र के साथ झगड़ो में बीत गये। अंत में लड़ाई ही में यह काम आया।

उक्त महदी का भाई अब्दुल रहमान अब पञ्चम राजा हुआ। यह दो ही महीने शासन करके मर गया। मुहम्मद अब्दुल रहमान (१०२३-२५) उस का उत्तराधिकारी हुआ। अनन्तर यहिया (१०२५—३१) उसको निकाल के खुद खलीफा बन गया। शीघ्र ही बागियों ने इसको भी मार गिराया। अब मुरतजा के भाई हिसाम तृतीय ने (१०३१—३६) राज्य-भार हाथ में लिया। इस समय सब राज्यकर बंद हो गये थे, जैसे हो सका, तैसे इसने भी पाँच वर्ष तक आनन्द से सरगोसा में बिताये, इसी के साथ इस घराने का अन्त हो गया। इन सब उलट फेरों का परिणाम यह हुआ कि ईसाईयो को अपना प्रभुत्व बढ़ाने का अच्छा मौका हाथ लगा।

७-ईसाईमतावलम्बी राजवंश।

विसगाथिक जाति के पेलयो नामक एक कार्य्य कुशल पुरुष ने कुछ सिपाही लेकर कावडाग के पर्वतो की कन्दराओं में आसन जमाया। जिन लोगो को अमीर का शासन असह्य था,

उनको इस स्थान में आश्रय मिलता था, इस तरह से इनकी वृद्धि होती चली गई। अब्दुल रहमान की राजगद्दी के झमेले में इसके पोत्र अलफांज़ो प्रथम ने रियासत की नीव डाली। धीरे धीरे उन्नति होती गई। इसने बेर बेर जाति को हराया। इसके पुत्र फ़ूला प्रथम (७६६-७५) ने ओविदो को राजधानी बनाया। थोडे दिनो में इस को किसी ने मारडाला। इस के पीछे इसका चचेरा भाई ओरोलिया तथा भतीजा सैलो गद्दी पर बैठे। ये अब्दुल रहमान के शरणागत हो गये। सैलो के पश्चात् अलफांज़ो द्वितीय (७८४-८४२) गद्दी पर बैठाया गया। यह अलफांज़ो शुद्ध कहलाता था, इसके समय में राज्य दृढ हो गया। पश्चिम में छ वर्ष तक अलफांज़ो प्रथम का अविवाहिता स्त्री से पुत्र राज्य करता रहा।

इसी समय एक दूसरी क्रिस्तानी रियासत स्थापित हो गई। अलहकम के शत्रुओं ने बार्सीलोना के चार्लस से सहायता ली, उसने अपने पुत्र लुई को भेज दिया। इसने एक साल में इब्रो तक सब भूमि ले ली। कुछ कारणों से वह ८०१ में लौट गया परन्तु इब्रो पर एक बेरा नामी योग्य पुरुष छोडता गया, जिसने राज्य पर आँच न आने दी।

चार्लस के परलोकवासी होने पर उसकी बारसिलोना नामक रियासत का बेरा अधिकारी हुआ, परन्तु इसका देश

निकाला हो गया और बेर्नहार्ड रियासत का स्वामी बन गया। दैवयोग से इसका भी देश निकाला हुआ और यह मार भी डाला गया। अंत में नवीं शताब्दी के परार्ध भाग में यह रियासत विलफ्रिड को मिली। इस की मौत के उपरांत ९०७ से यह रियासत इसके घर की जागीर हो गई। फिर धीरे धीरे यह बढ़ती चली गई।

अलफांज़ो द्वितीय के बाद राविरो प्रथम (८४२—५०) तथा आरडोनो प्रथम (८५०—६६) सदा मध्य स्पेन के झगड़ों ही में निमग्न रहे। अलफांज़ो तृतीय महान् (८६६—९१०) के समय में राज्य की उन्नति हुई। इसने ओविडो छीन लिया और उसे अपनी राजधानी बनाया। अंत समय इसने अपनी रियासत अपने तीनों पुत्रों में बाँट दी। ९३१ में राविरो द्वितीय ने फिर रियासत एकत्रित करली। यह चतुर और पराक्रमी था। आरडोनो तृतीय (९५०—५७) अपने पिता का अनुसरण करना चाहता था, परन्तु इसका ससुर और भाई सेंको इसके कंटक हो गये। सेंको प्रथम (९५७—६६) ने खलीफ़ा से मित्रता करली। राविरो तृतीय (९६६—८२) के दुष्ट दरबारियों ने इसको राजसिंहासन से उतार के इसके चचा बेरमुडो द्वितीय (९८२—९९) को गद्दी पर बिठाया। यह अत्यंत भोला भाला मनुष्य था। इसके पुत्र अलफांज़ो पंचम (९९९—१०२८) ने रियासत बड़ी

बुरी दशा में पाई। इसने अपनी लियाकत से पिता के इस कलंक को मिटा दिया। यह नीतिज्ञ था। इसका पुत्र वेरमुडो तृतीय एक संग्राम में खेत आया।

दशवीं शताब्दी के अंत में स्कुवीं जाति ने उत्तर में विस्के-खाल के समीप नवेर नामक एक चौथी रियासत खड़ी की। सेंको इसका संस्थापक था। विस्केखाल के पहाड़ी स्थान होने के कारण शत्रुओं की शंका नहीं रहती थी। जैसे मोरों की अवनति होती जाती थी, तैसे ही यह निर्भय होता जाता था। इसके पुत्र सेंको महान् (९७०—१०३५) ने गरसिया की बहन से शादी करली थी। इसके साले के मार डाले जाने पर इसे वेरमुडो पर चढ़ाई करने का बहाना मिल गया, और एक घोर संग्राम में विजय पा के इसने बहुत कुछ लाभ उठाया। कुछ दहेज के रूप से और कुछ अपने पराक्रम से इसने रियासत खूब बढ़ाई। अंत समय इसने राज्य को अपने चार पुत्रों में बाँट दिया।

इस अवसर को पाके वेरमुडो ने अपने पहले प्रभुत्व की अभिलाष की और युद्ध ठाना, परन्तु वह स्वयं ही लड़ाई में काम आया।

फिर इन भाइयों में बड़ी लड़ाई छिड़ गई। परिणाम यह हुआ कि फर्डिनेंड और रामिरो के आधिपत्य में केस्टाइल और आरागन की दो रियासतें शेष रह गईं। फ़रडिनेंड प्रथम (१०३७—६७) ने नाश को प्राप्त मुसलमानी राज्य का बहुत कुछ भाग ले लिया और अमीर भी इस के शरण में आ गया। इसने मरते समय अपना राज्य तीन पुत्रों में बाँट दिया, तब भी फूट एवं वैर ने पीछा न छोड़ा। सन् १०७२ में अलफांज़ो चतुर्थ ने उसे सम्मिलित किया।

राविरो प्रथम (१०३५—६३) मूअर जाति के लोगों के झमेले में पड़ गया। इस के पुत्र संको राविरो (१०६३—९४) ने अलफांज़ो षष्ठ की सहायता से नवेर जीत लिया, और आपस में इस देश का आधा राज्य बांट लिया। इस के बाद पेड्रो (१०९४-११४) तथा अलफांज़ो प्रथम (११०४-११३६) ने सरगोसा इत्यादि स्थान ले लिये। अब सरगोसा आरागन रियासत की राजधानी हुआ।

इस समय पोप ग्रेगोरी सप्तम के धार्म्मिक उत्साह सागर ने ऐसी बेढब लहर ली की सारा स्पेन उस में शराबोर हो गया। आज से स्पेन रोमन कैथोलिक मत का कट्टर अनुयायी हुआ।

केस्टाइल के अलफांज़ो षष्ठ ने अच्छी उन्नति की और महाराजाधिराज का पद प्राप्त कर लिया। इसका बुढापा शोचनीय रहा। ११०८ में इसका एकलौता पुत्र सेको लड़ाई में मारा गया। ११०९ में यह स्वयं परलोक को सिधारा।

अब इसकी पुत्री उरका सम्राज्ञी हुई। यह विधवा थी। दोनो रियासते सम्मिलित करने के हेतु इसकी सगाई आरागन के अलफांज़ो प्रथम के साथ की गई। उरका अपने प्रथम पति से उत्पन्न पुत्र अलफांज़ो सप्तम को सम्राट् बनाना चाहती थी, इसलिए उसने केस्टाइल के प्रधान पुरुषों को भड़काया। अंत में फल यह हुआ कि दोनो रियासते फिर अलग हो गई।

अलफांज़ो मुअरो को अपने अधिकार में लाना चाहता था। परन्तु ११३४ में यह पराजित हो गया। यह इसी शोक से मर गया। इसने अपना राज्य धर्म के लिए सकल्प कर दिया था। रियाया ने इसे अस्वीकार किया और इसके भाई राविरो द्वितीय (११३४-३७) को महन्ती के पद से बुलाकर उसे राजमुकुट पहना दिया। इसने अपनी दो वर्ष की कन्या पेट्रोनिला की सगाई बेरेंगर चतुर्थ के साथ करके पुन साधुमठ में वास किया। इस कन्या के पुत्र अलफाजों द्वितीय के समय (११६२) से कैटेलोनिया और आरागन नामक रियासतें सदैव के लिए सम्मिलित हो गई।

अब केस्टाइल और आरागन ईसाई राजाओं की मुख्य रियासतें रहीं, जो पीछे से फ़र्डिनेंड और इसैवेला के समय में एक में मिलीं।

८—मुसल्मानों का अधःपतन।

मुसलमानी राज्य के नष्ट होते ही अनेक छोटी छोटी रियासतें खड़ी हो गई। इन सब में सेविल प्रधान थी। इसका रईस अलमोतामिद था। इस पर भी अलफ़ाजो षष्ठ ने धावा किया। यह अमीर अलफ़ाजो का आगमन देख कर डरा और रक्षा के लिए इसने मोराको के महाराज यूसुफ़ तशर्फ़ी की शरण ली। इधर अलफांज़ो ने भी आरागन इत्यादि से एका कर लिया। फिर भी सन् १०८६ में इस ८० वर्ष के बुड्ढे यूसुफ़ ने जल्लाक की लड़ाई

में ईसाइयों को पूर्ण पराजय दी। अलफांज़ो को जान बचाना मुश्किल हो गया। इसी अंतर में यूसुफ़ के ज्येष्ठ पुत्र की मौत हो गई और वह अफ्रीका लौट गया।

अलफांज़ो ने सुअवसर पाके फिर आक्रमण किया और मरसिया और अलमेरिया को घेर लिया। इधर यूसुफ मराको पहुँचा और १०९० में पुनरपि स्पेन को आया। इसने केवल ईसाइयो से भिड़ना ठीक न समझा और पहले अमीर मोतमिद ही को निकाल बाहर किया। वह बेचारा भागता फिरा और सहारा ढूँढता रहा,पर किसी ने भी न सुनी, अन्त में वह अफ्रिकेनस के हाथ आया और कारागार में छोड़ दिया गया।

ईसाइयों की ओर रुई दिआज़ कम्पीउर नामी एक धुरधर वीर हो गया है, यह दिसिड के नाम से प्रख्यात था। १०९४ में इसने वेलेंसिया की विजय प्राप्त की थी, परन्तु यह १०९९ में काल-ग्रस्त हुआ। यूसुफ़ ने अवसर पाके वेलेसिया भी कब्जे में की, थोड़े ही समय में इसने खंडित रियासत को पुन पकत्र किया, परन्तु ११०३ में यह अपने पुत्र को सारे अधिकार दे कर जन्मभूमि को लौट गया और ११०६ में इसने शरीर छोड़ा।

इस समय मु० अब्दुल्ला नाम का एक पुरुष अरब से अफ्रिका में आया। यह महदी के नाम से विख्यात था। इसने अल्मुहेद नाम की एक नई प्रणाली निकाली, इसके उपरांत

यक था। इसने सलमका के विश्वविद्यालय को पेरिस एव आक्स फोर्ड यूनीवर्सिटी के मुकाबिले को पहुँचा दिया। ईसाई और अरबी शास्त्री इसके दरबार में रहा करते थे। इसने "सीटपर्तिदस" नामक एक उत्तम न्यायशास्त्र रचा था, जिसका उचित प्रयोग १३४८ से हुआ। इसे एक समय रोमाधीश होने तथा ऐश्वर्य बढ़ाने की सूझी। इस कारण इसने राजा चुनने वालो को रिश्वत दी और दरबार भी उसी प्रकार उत्तम रीति से सजवाया। रुपये का खर्च ज्यादा होने से इसने कर बढा दिया और सिक्के भी वास्तविक मूल्य से अधिक कीमत पर चलाये। १२७५ में मूअरो ने सग्राम में इसका ज्येष्ठ पुत्र काम आ गया। पुराने रिवाज के मुताबिक राजा का दूसरा पुत्र सँको युवराज बनाया गया। इसकी पत्नी इगनो अपने पुत्र फ़ार्डिनेंड का राज तिलक चाहती थी, उसके भाई भी अपने भांजे की सहायता को उपस्थित हुए।

इसी अवसर पर अल्फोंसो दशम और उसके पुत्र में अनबन हो गई। इस विरोध से इसके अनेक छोटे भाइयों तथा मूअर लोगो ने लाभ उठाया। जिसका फल सँको चतुर्थ (१२८४-९५) को भोगना पडा। समस्त रियासत बट कर छिन्न भिन्न हो गई। सँको की मौत के बाद इस रियासत की और भी दुर्दशा हुई जब कि एक अबूझ बालक फर्डिनेंड चतुर्थ (१२९५—१३१२) के सिर पर यह राज्यभार पडा। इसकी नाबालिगी में इसकी माता सँको के वचनानुकूल राजकाज करती रही। इस अबला के हाथ राज्य-प्रबन्ध को देख अनेक राज्यलोभी घिर आये। एक ओर से इसका

देवर जान और दूसरी ओर से इसका छोटा पुत्र अलफोंजो अपने मामा फ्रांसाधीश तृतीय फिलिप के बाहुबल से आगया। पीछे से पोप ने कहा कि मॅको का व्याह नियम के विरुद्ध हुआ था, इसलिए फर्डिनेंड को कोई अधिकार ही नहीं है। फिर भी इस स्त्री ने अपनी बुद्धिमानी के प्रभाव से अपना मत्लब बनाया। यह कभी स्वय दब जाती थी, और कभी युद्ध करने को उद्यत हो धमकाती थी। ऐसी ही माया से यह काम निकालती रही। पुत्र के बालिग होते ही इसने सब राज्य कुशलपूर्वक उसके हाथ में दे दिया। फर्डीनेंड चतुर्थ कठोर-हृदय पुरुष था, इसलिए इसके गद्दी पर बैठते ही फिर विद्रोह की सभावना हुई, पर १३०५ में केमिलो में सुलह हो गई। इस सन्धि के अनुसार इसने थोडी सी भूमि अलफोंजो को प्रदान कर दी, जिसका पुत्र यहां आकर बसा और जिससे मेडिना सिडोनिआ वश चला।

इसके बर्ताव के कारण राज्य में कभी शान्ति न रही। इसने दो बार प्रण किया था कि बिना पूर्ण परीक्षा किसी को राजदंड न दिया जायगा फिर भी इसने बिना किसी से पूछे और जांचे दो भाइयो को प्राण-दंड दे दिया। इसी पर किसी ने इसको रात्रि में सोते समय सदा के लिए सुला दिया।

इस समय इसका पुत्र अलफांजो ग्यारहवाँ (१३१२-५०) केवल दो वर्ष का बालक था। गत राजा के भाई डान पेड्रो और चचा डान जान में उसके वली बनने के बारे में झगडा हो गया। तीन वर्ष किसी का शासन ही न रहा। सबको अपनी अपनी पड गई। प्राणरक्षा के हेतु वे राजा को अविला के गिरजा

घर में भगा ले गये। पडोसी राजा लोग अरक्षित राज्य की ओर अपने हाथ फैलाने लगे। अत में पोप और सैंको चतुर्थ की पत्नी ने दोनो में सुलह करा दी। पेड्रो को पूरबी एवं दक्षिणी प्रान्त और जोन को उत्तरी और पश्चिमी सूबे मिले। रईस ग्रेनाडा से युद्ध करने में ये दोनो मारे गये।

अलफांजो बडा कठोर और निर्दयी था। इसने अपने चचेरे भाई को निमंत्रण के बहाने बोला कर मार डाला। अलफोंजो दशम के समय से राजा के कर लगाने के कारण प्रजा में अशान्ति चली आती थी। वह अशान्ति समय के साथ बढती गई। इसे शान्त करने को १३२८ में इसने दो कानून बनाये। इन कानूनो से कोरटेस नामक एक कार्यकारिणी सभा बनी, जिसे अनेक अधिकार मिले। इसमें पादडी, रईस लोग और जनसमुदाय के प्रतिनिधि रहते थे। इन प्रतिनिधियो को शहर की शासन-सभाओं के मैजिस्ट्रेट लोग चुनते थे। राजा ने यह नियम किया कि (१) राज्य के सब प्रधान कार्य इस समाज की सम्मति से किये जायँ और (२) राजा बिना इस की सलाह के कोई कर न बाँधेगा। इतना अधिकार देकर भी यह निर्भय रहता था, क्योंकि चुनने का काम मजिस्ट्रेटो का था, इसलिए नगरनिवासी उसी की तरफ़ हुआ करते थे और रईस लोग कुछ करही नहीं सकते थे। इस सभा से युद्ध-व्यय के लिए इसने हर एक पुरुष की मालियत का बीसवाँ अंश पाने की सम्मति ले ली।

पुर्तगाल-नरेश की पुत्री के साथ विवाह करने के प्रयोजन से इसने अपनी प्रथम पत्नी को छोड दिया। दूसरा विवाह तो हुआ,

परन्तु यह एक और परम सुन्दरी रमणी के प्रेम में फँसा था, अत: इसने दूसरी पत्नी को भी दूर करने का प्रयत्न किया। तब दोनों पत्नियों के पिताओं ने इस पर अस्त्र गहे। दो वर्ष (१३३५—७) के बाद बड़ी कठिनता से इसने उनको शान्त तो कर पाया, पर इसे पुर्तगाल की राजकुमारी को रानी बनाना ही पड़ा।

यह सुलह बहुत ही सामयिक हुई क्योंकि १३३९ में फेज का रईस अब्दुल हकम जिब्राल्टर पार कर स्पेन पर चढ़ आया। ग्रनडा के रईस ने इसे राजाधिराज माना। १३४० में इसने मूरों को सलेडो नदी के तट पर परास्त किया, परन्तु फिर यह अफ्रीका लौट गया। ग्रनडा और अफ्रीका का सम्बन्ध भग करने के लिए अलफ़ांज़ो ने १३५० में जिब्राल्टर घेर लिया, परन्तु प्रयोजन सिद्ध होने के प्रथम ही यह प्लेग-रोग से पीड़ित होकर चल बसा।

पेड्रो प्रथम (१३५०—६९)। यह क्रूरता में अपने पिता से पाँच पैग आगे था, अत इसका नाम पेड्रो "निर्दयी" पड़ा। इसने कुछ अत्याचार तो रईसों को निर्बल करने के विचार से किये, पर विशेषतया यह उसका स्वभाव ही था। यह १६ वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा। इसकी माता ने सौतिया-डाह से राजा के हाथों से एलीनर दि गुजमैन को कैद में मरवा डाला।

मैरिया नाम्नी एक महिला से पेड्रो अपना विवाह पक्का कर चुका था, पर फरासीसियों से मेल करने की दृष्टि से इसने ब्लांश

से विवाह कर लिया। इस पर इसके एक मित्र अलफांज़ो त
अन्य रईसों ने कलह उठाया, जिस को इसने कठोरता से शां
किया। ब्लाश के रहते ही यह एक ग्रैर स्त्री पर ग्रासक्त होकर उ
भी अपनी पत्नी बनाना चाहता था, लेकिन फिर मैरिया की ग्रै
इसका मन फिर गया। इस पर पोप ग्रैर फ्रांस-नरेश ने झगड़
किया ग्रैर उन्होंने पेड्रो को घेर लिया। इस ने अपनी रक्षा के लि
ब्लाश को धर्मपत्नी माना ग्रैर शिकार खेलने के बहाने से य
एक दिन घेरे से निकल गया, ग्रैर (१३५५—६) शत्रुओं
बदला चुकाने में भी समर्थ हुआ।

१३५६ में इसकी आरागन से लड़ाई छिड़ गई, जो इस
जीवन-काल भर होती रही। एलीनार का ज्येष्ठ पुत्र हेनरी आ
गन की मदद पर था। रईस लोग यद्यपि इससे नाराज थे पर प्र
पर इसका नम्र भाव रहता था, अतः रईस इसका कुछ
न बना सके। इधर मौका पाकर इसने ब्लाश को मरवा डाला ग्रै
१६६२ में शपथ खा कर मैरिया को रानी बनाया।

हेनरी १३६५ में फ्रांस की सहायता से एक बड़ी सेना ले क
चढ़ आया। इस समय फ्रांस ग्रैर अंगरेजों में युद्ध हो रहा था
पेड्रो अंगरेजों का साथी बना ग्रैर १३६७ में अंगरेजों की सहायत
से इसने नजेरा की लड़ाई में विजय पाई। हेनरी भाग गया प
उसका सैनिक वर्ग्रा कैद कर लिया गया। इतने ही में अंगरेज
दल में ज्वर-रोग का प्रवेश हुआ तथा अन्य कारणों से उस द
का सेनापति राजपुत्र ब्लैक प्रिंस वापस चला गया। इसी अवस

पर हेनरी ने फिर फौज लेकर १३६९ में मांटील की लड़ाई में विजय पाई और पेड्रो को मार ही डाला। पेड्रो के एक पुत्र और दो पुत्रियाँ थीं। बालक बचपन ही में मर चुका था। बालिकायें ब्लेक प्रिंस के भाइयों को विवाह दी गई।

हेनरी द्वितीय (१३६९—७९)। यह न तो पिता के नाते से और न पत्नी के सम्बन्ध से राजपद का अधिकारी था, पर पीड़ित प्रजा ने इसे प्रसन्नता से राजा चुना, इस पर पुर्तगाल के पेड्रो प्रथम ने अपनी दादी की ओर से स्वत्व प्रकट किया, और जान ने अपनी स्त्री की ओर से। पेड्रो ने विजय प्राप्ति को अपनी शक्ति के बाहर समझकर और जान को अधिकारी अङ्गीकार करके अँगरेजों से मेल किया। इस पर फ्रांस ने उपर्युक्त विजयी हेनरी की सहायता की, उसने तुरन्त पुर्तगाल पर हमला करके राजधानी लिस्बन को घेर लिया। पेड्रो को सुलह करनी पड़ी। दो वर्ष बाद हेनरी ने आरागन से भी संधि कर ली।

जान प्रथम (१३७९–९०)। इस का राजत्वकाल पुर्तगाल से झगड़ों ही में पूरा हो गया। १३८३ में पुर्तगाल और केस्टाइल में संधि हुई। अब फर्डिनेंड की बेटी बीट्रिक्स की सगाई केस्टाइल नरेश के पुत्र के साथ तै हुई, और यह भी तै हुआ कि इस राजकुमारी की संतान को राज्यपद मिलेगा। कुछ मास के बाद फर्डिनंड की मौत हो गई और उसकी पत्नी पुर्तगाल की अध्यक्षा बनी, परन्तु पुर्तगाल वालों ने गत नरेश के भाई जान को राजा बनाया।

१३८४ में जान प्रथम ने लिस्बन घेर लिया, परन्तु पाँच महीने के व्यर्थ परिश्रम के बाद वह पुर्तगाल से लौट आया। इंगलिस्तान का जान पुर्तगाल के पक्ष पर था। १३८५ में एल्जुबरोटा की लड़ाई में पुर्तगाल ने केस्टाइल को परास्त किया। १३८७ में घेंट के जान और जान प्रथम में सन्धि हो गई। इस के पीछे भी पुर्तगाल से झगड़ा चिर काल तक स्थिर रहा।

हेनरी तृतीय (१३९०-१४०६)। यह अपने ग्यारहवें वर्ष ही सिंहासनारूढ़ हुआ। गत राजा के नियमों के अनुसार राजकाज बड़ी सभा पर निर्भर रहा। इस समय पादड़ी एव रईस बहुत बलवान हो गये और नाना भांति के नये उपद्रव उत्पन्न होने लगे। १३९३ में इसने राज्यप्रबंध अपने हाथ में लेकर बड़ी चतुरता, और वीरता से बखेड़ियों को शांत किया, और पड़ोसी रईसों से अपनी छिनी हुई ज़मीन भी लेली। इसके राज्य में कोई बाहरी झगड़े नहीं हुए क्योंकि इंग्लैंड और पुर्तगालनरेश इसके सम्बन्धी थे। २७ वर्ष की अवस्था में इसका शरीरान्त हुआ।

जान द्वितीय (१४०६-१४५४)। यह अभी ३ वर्ष का बालक था और उसका चचा फार्डिनेंड राज काज चलाता था। इसने मूर लोगों से एंटीक्वेरा ले लिया। १४१७ में इस की माता की मौत हो गई। तब जोन के ऊपर राज भार पड़ा। यह बड़ा आलसी और अयोग्य पुरुष था। इसने सारा भार अलवरो पर छोड़ दिया। इस राजमंत्री ने रईसों के आक्रमणों को अपनी वीरता और चतुरता से दमन किया और राज्य पर वार न आने दिया।

जान की दूसरी स्त्री इसैबेला ने कुपित हो कर इसे निकलवा दिया। यन में इसे प्राण दंड मिला। १४९३ में एक वर्ष बाद यह राजा भी मरगया।

हेनरी चतुर्थ बल और बुद्धि का वैरी था। इसका उपनाम "अशक्त" था। इसका मित्र मारक्विस आफ विलेना मन्त्री था। हेनरी का व्याह पुर्तगालनरेश की पुत्री ज्वाना से हुआ। उपर्युक्त मारकिस के स्थान पर अब 'बेल्ट्रन दिला क्यूला' नियत हुआ। यद्यपि शासन में कोई कठोरता न थी तब भी प्रजा पर इनका प्रभुत्व न रहा और गदर सा मच गया। १४६५ में मारकिस और केरिलो के कारण बलवा शांत हो गया। बागियो ने राजा की एक प्रतिमा बनाई और उस के राज्यच्युति के सब संस्कार किये। उसका भाई अलफांजो राजा बनाया गया। यह १४६८ में मारा गया। तब इसकी बहिन इसाबेला रानी हुई।

इसने चतुराई से कहा कि मैं अपने बड़े भाई से लड़ना नहीं चाहती। इस प्रकार संधि हो गई। इसाबेला को युवराज्ञी का पद मिला। राजपुत्री के मामा ने अपनी भांजी के लिए बड़ा प्रयत्न किया पर कुछ भी न हो सका। हेनरी के बाद इसैबेला ही गद्दी पर बैठी। इसने आरागन-नरेश फर्डिनेंड से अपना विवाह कर लिया। इस सम्बन्ध से स्पेन में एक नवीन सृष्टि सी हो गई।

१०—आरागन के राजा लोग।

(१२१३—१४७९)।

अलफ़ोंसो द्वितीय के बाद पेड्रो प्रथम (११९६—१२१३) से प्रजा अप्रसन्न हो गई थी। प्रथम कारण यह था कि इसने गद्दी पर बैठने के समय पोप को न माना था और दूसरे इसने प्रजा पर कर बढ़ा दिया था। सब ने एका कर लिया और इसको कर घटाना पड़ा, इस तेरहवीं सदी से ईसामसीह की जन्मभूमि जेरुशलेम को बचाने के लिए क्रूसेड नामक युद्ध की वायु बड़े वेग से बह रही थी। इसने भी उसी में अपने प्राण खोये।

जेम्स प्रथम (१२१३—१२७६)। इसने केटोलोनिआ के चतुर मल्लाहों की मदद से वेलेरिक द्वीपों को (१२२९—३३) ले लिया। यह द्वीप-समूह मुसल्मानों और समुद्री डाकुओं का दुर्ग था जो कि ईसाई रियासतो के सैनिक थे। जेम्स ने १२३८ में वेलेंसिया को विजय किया, और १२६६ में मरासिया जीत कर अलफ़ोंसो "बुद्धि[illegible] दी। अब मुअर रियासतों में केवल ग्रनडा ही [illegible] उसका बचा [illegible] ना राज्य अपने बेटों में बाँट देना चाहता [illegible]र लोगों से पटीक्वेरा ले लि[illegible] अनेक उपद्रवों से सामना करना पड़ा, मौत हो गई। तब जोन के ऊपर राज[illegible] का परलोक-वास हो जाने से और अयोग्य पुरुष था। इसने सारा [illegible] को प्राप्त हुआ।

छोड़ दिया। इस राजमंत्री ने रईसो के आक्रमण [illegible] ओर से सिसली पर और चतुरता से दमन किया और राज्य पर वार [illegible] के अनुयायी अल-

फोंसो तृतीय दोनो की आयु ज्यादातर इसी झगड़े में समाप्त हो गई। १२८३ में यह द्वीप इनके हाथ आ गया। नेपल्स नरेशो के गडबड से यह कुछ भी न दबा। प्रजा ने पेड्रो को हथियार-बन्द सिपाहियों की आवश्यकता देखकर अपना मन्तव्य सिद्ध कर लिया और सार्वजनिक स्वत्वो की मंजूरी इससे ले ली। इसका मुख्य उद्देश्य यह था कि राजा अपनी प्रजा के साथ निर्दयता का व्यवहार न कर सके। यह नियम वास्तव में फलदायक हुआ।

अलफोंसो तृतीय (१२८५—९१)। इसने एक और ऐसा ही स्वत्व १२८७ में दिया जो कि उतना ही उत्तम था। "ऐक्य के अधिकार" की मंजूरी होने पर प्रजा को अपनी स्वाधीनता के बहाने से राजा पर अस्त्र गहने का साहस मिला।

इसके भाई जेम्स द्वितीय (१२९१—१३२७) ने सिसिली अपने छोटे भाई फ़्रेड्रिक को देदी। १३१९ में इसने आरागन कैटलोनिया और वेलेंशिया नामक सूबों को मिला कर एक राज्य स्थापित किया।

अलफोंसो चतुर्थ (१३२७—३६)। इसने अपनी दूसरी स्त्री तथा उसके पुत्रों के लिए कुछ भूमि अलग करदी और वास्तव में ऊपर कहे गये प्रबन्ध को रद्द कर दिया। यह बात आगामी आपत्तियों का अंकुर थी।

पेड्रो चतुर्थ (१३३६—८७)। इसने पिता के संकल्प को न मान-कर अपनी सौतेली मा और भाइयों से जमीन ले ली। इस पर इसके मामा अलफोंसो एकादश ने अपनी बहन एवं भांजों का पक्ष

हेनरी चतुर्थ के बाद कैस्टाइल की रियासत इसाबेला के नाम हो गई थी क्योंकि लोग उसकी पुत्री ज्वाना को दुष्टा समझते थे। केस्टाइल के रईसों ने इस पर बलवा किया। ज्वाना का मामा पुर्तगालनरेश अलफोंसो पचम भी अपनी भांजी का पक्ष ले के उन्हीं से मिल गया। १४७६ में टोरो स्थान में ये लोग हारे और अलफोंसो फ्रांस को भाग गया। फ्रांस से मदद मिलने की इसे बडी आशा थी पर सधि के प्रतिकूल फ्रांस कुछ नहीं कर सकता था। अलफोंसो ने निराश होकर १४७८ में लिसबन की सधि कर ली। इस तरह अभागिनी भांजी का राज्य पर स्वत्व जाता रहा १४७९ में जान द्वितीय की मृत्यु हो गई, और फर्डीनेंड को आरागन का आसन मिला। इस समय आरागन और कैस्टाइल दोनों का सम्मिलन हो गया। अभी दोनो राज्यों के नियम अलग ही अलग रहे, परन्तु धीरे धीरे ये एक दूसरे में पूरे तौर से मिल गये। इस समय बहुत से शासन-सुधार भी हुए। राजा और रानी दोनों ही का कट्टर कैथोलिक मत था।

इसी समय में ऐसे लोगो पर जो रोमन कैथोलिक मत नहीं मानते थे मुकद्दमा चलाने और उन्हें दड देने के लिए "इन्‌क्विजीशन" नामक अदालत स्थापित की गई। इस के साथ ही "होली आफिस" या "पवित्र कार्यालय" की भी सृष्टि हुई। उसकी पहली आज्ञा से हजारों यहूदियों को फांसी देदी गई और १४९२ में वे सब स्पेन से निकाल दिये गये। इससे देश के व्यापार को बहुत हानि पहुंची।

इस राजा ने प्राय॰ सब प्रायद्वीप पर शासन जमा लिया। इसने १४९२ में ग्रनडा ले लिया। १५ वीं शताब्दी में मूर लोगो का वश

समाप्त हो गया और उन में से कुछ देश से निकाल दिये गये। शेष ने ईसाई मत स्वीकार कर लिया। स्पेन का कुछ भाग फ्रांस के अधिकार में था, वह भी इसने १४९३ में छीन लिया। अब पुर्तगाल को छोड़ कर समस्त प्रायद्वीप पर इसका राज्य था।

स्पेन के सिवा इस ने दूर दूर स्थानों में उपनिवेश बसाये और राज्य को बढ़ाया। इस समय समुद्री खोज तथा परिभ्रमण का बड़ा जोश था। यह प्रायद्वीप इस बात में सर्वश्रेष्ठ था। केनारी द्वीपादि इसी भांति स्पेन के हाथ लगे। स्वनामधन्य कोलम्बस की विख्यात यात्रा इसी समय में हुई और यह इसाबेला ही की अनुमति से हुई थी।

इटली से भी स्पेन राज्य का कुछ सबंध था, और इस समय का नेपल्स नरेश अन्यायी था। फर्डीनेंड नेपल्स पर अपना स्वत्व समझता था, उधर फ्रांसराज वहाँ अपना अधिकार जमाने आ रहा था। दोनों दलों का जमघट हो गया। फर्डीनेंड ने फरासीसियों को मार भगाया और १५०४ में नेपल्स नरेश को निकाल कर वहाँ अपना शासन जमाया।

इसी साल में फर्डीनैंड की स्त्री की मृत्यु हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ समय के लिए इस राज्य का सम्मिलन डगमगा गया। इसके कारण ये थे।—(१) फर्डीनैंड और इसाबेला का संबंध होने पर भी प्रजा दोनों रियासतों को अलग ही अलग मानती रही, (२) प्रजा फर्डीनेंड से प्रसन्न न थी, (३) और १४९७ में इसाबेला के पुत्र का देहांत हो चुका था।

केस्टाइल पर इसाबेला के बाद पुर्तगाल की ज्वाना का हक था, पर यह पागल होगई थी ग्रेर इसका पुत्र बिलकुल बच्चा था, इस से इसका पति फिलिप उसका अधिकारी हुआ।

१५०६ में फ़र्डीनेंड ने दूसरा विवाह फ्रांस के लुई द्वादश की भतीजी से कर लिया। जिससे अनायास ही नेपल्स इसका हो गया। इसने सहर्ष कैस्टाइल को छोड दिया ग्रेर आरागन एवं नेपल्स से ही संतोष रक्खा, परंतु शीघ्र ही फिलिप का शरीरांत हो गया। यहाँ के बड़े महन्त की कृपा से फ़र्डीनेंड ही अब केस्टाइल का प्रबंधकर्ता बनाया गया। ज्वाना पतिवियोग से बिल्कुल मर्माहत थी ग्रेर राज काज में कुछ भी नहीं बोलती थी।

फ़र्डीनेड इस समय की राजनीति पर विशेष ध्यान देता था। यह रोम के पोप द्वारा स्थापित पवित्र संस्था का सदस्य बना ग्रेर फ्रांस से नवेर को जीत लिया–जो यहाँ से दहेज में फ्रांस को मिला था। १५१५ में नवेर भी केस्टाइल राज्य में जोड दिया गया। एक साल बाद मरते समय यह आरागन ज्वाना को देगया ग्रेर चार्लस को दोनों राज्यों का सञ्चालक बना गया।

१२–हैप्सबर्ग वंश।

(१५१६–१७००)।

इस समय स्पेन की दशा कुछ अच्छो न थी। कैस्टाइल ग्रेर आरागन अलग अलग रियासतें समझी जाती थीं। उस पर भी

आरागोन तीन सूबों में बटा हुआथा जो अपने को एक दूसरे से पृथक् समझते थे, इधर फ्रांस नवेर और नेपल्स पर दृष्टि लगाये हुए था, तथापि भविष्य में दो शताब्दियों तक स्पेन का सितारा ऐसा चमका कि यह योरोप में सर्वोत्तम राज्य समझा जाने लगा। इन्हीं दो सदियों के अन्त में इस देश का उत्तम से मध्यम श्रेणी में पतन भी हुआ और फिर यह पूर्व दशा को न पासका।

चार्लस प्रथम (१५१६-५८)। यह नीदर लैंड्स में पैदा हुआ था। यहीं इस का पालन पोषण भी हुआ था। १५०५ में यह रियासत इसने अपने पिता से पाई थी। १५१७ में स्पेन इस को मिला। यह न तो स्पेन की भाषा और न रीति भांति से ही परिचित था। इसके मन्त्री एवं मित्र सब वहीं के थे जिन को स्पेन की भलाई का कुछ ध्यान न था। लोग उन को लोभी और स्वार्थी कहते थे।

चार्लस अपनी माता को अलग कर के राज्यपद चाहता था। आरागन वाले इस पर विगड़ उठे पर कैस्टाइल में बड़े महन्त के प्रयत्न से कार्य सिद्ध हो गया। इसी भांति उक्त महन्त ने कई उपकार चार्लस के साथ किये। इसने नवेर की चढ़ाई से फरासीसियों को मार भगाया और वहां के निवासियों के उपद्रव के भय से पहाड़ी दुर्गों को नष्ट कर दिया।

१५१९ में इसे जर्मनी*का राज्य भी मिला। इस समय यही योरोप में सब से अधिक शक्तिमान् राजा था।

---

*जर्मनी के इतिहास के ३२ पृष्ठ पर देखिए।

जब कैस्टाइल वासियो ने देखा कि उनका धन चार्लस के लवे चौंडे राज्य के सॅभालने में उडाया जा रहा है, तब उन लोगों ने असन्तोष प्रकट किया। चार्लस ने चतुराई के साथ इस उलझन को सुलझाया क्योंकि इस समय में वह जर्मनी के लिए सेना आदि ठीक करने में लगा था।

उसने नगरों के अफसरों की एक सभा की और जो लोग उसके विरुद्ध थे, उन्हें उस में शामिल न किया। उसके द्वारा अपना मतव्य सिद्ध कर के यह जर्मनी चला गया और रियासत को रईसों और प्रबन्धकर्त्ताओं के सिपुर्द कर गया।

टोलडोवासियो ने "होली जटा" या "पवित्र सयोग" नामक एक सभा पविला में स्थापित की। "ज्वान दि पेडिला" उसका मुखिया था। इसने बलवा करके रियासत के अध्यक्षों को पराजित किया और ज्वाना को कैद कर लिया। यह चाहता था कि वह स्वयम् ज्वाना के नाम से राज्य करना शुरू करे, पर ज्वाना ने यह बात स्वीकार न की, इसलिए चार्ल्स ही स्पेन का राजा रहा और बागियो का जोश ठढा हो गया।

रईसो और सर्वसाधारण लोगों में अनबन थी, इसने एक को दूसरे से भिडा दिया और इस तरह विद्रोहियों का नाश किया।

इस समय प्राय. स्पेन ही योरोप का राजा था। इस चार्ल्स प्रथम का आतंक मेक्सिको, पेरू, पफ्रिका आदि स्थानो में फैला हुआ था। १५३८ में इसने फ्रांस से सधि करली और निर्भय हो गया। इसने प्रजा को पूरा पूरा गुलाम बना लिया था। कैस्टाइल के

रईसों को प्रतिकूल समझ कर इसने उनको दर्बार से निकाल दिया। इससे दर्बार में साधारण पुरुष ही रह गये, जिनकी संख्या बहुत कम हो गई थी, इसलिए चार्लस और सभा का मत एक था। जीवन के कठिन परिश्रम के कारण तथा जर्मनी में असफलता से उसने अंतिम दो वर्षों के लिए सब बातें त्याग दीं और १५५८ में परलोकवासी हुआ।

१३–इँगलैंड से भारी जल-युद्ध ।

(१५५८–१५९८)।

इस समय हैप्सबर्ग वंश के दो भाग हो गये। चार्लस के भाई फर्डीनैंड ने आस्ट्रिया का राज्य और स्पेन को उसके एकलौते पुत्र फिलिप ने पाया।

फ़िलिप द्वितीय (१५५८—९८)। यह औरों के देखते ज्यादातर स्पेनजातीय था। अन्य देशों में इस ने कोई भी विजय नहीं प्राप्त की, पर स्पेन में अनेक आंदोलन करता रहा। कैस्टाइल में इसका निवास रहता था, इसलिए इस सूबे पर इसका विशेष ध्यान रहना स्वाभाविक ही था। अन्य सूबे समीप न होने से थोड़ा बहुत सुखी थे, परन्तु इनमें एका न था, इसलिए एक सूबे पर अपना आतंक जमाने के लिए वह दूसरे सूबे की सहायता ले लेता था।

फिलिप ने अपनी राजधानी मेड्रिड नगर को बनाया। माता की ओर से इसका अधिकार पुर्तगाल पर भी पहुँचता था। १५८०

में इसने उसे भी ले लिया। इस देश का प्रबन्ध करते समय इसने बहुत से पुर्तगालियों को निकाल कर वहां स्पेनियों को बसाया। इन दोनों में सहानुभूति का होना असम्भव मात्र था।

फ़िलिप ग्रौर उसके मन्त्री एन्टोनिओ पेरेज़ में राजनैतिक मामलो में कुछ अनबन हो गई। वह चतुरता से आरागन भाग गया, परन्तु फ़िलिप ने उसे १५९० में पकड़वा मँगाया ग्रौर मरवा डाला। इसने ऐंटोनियो के सहायकों की भी अपने फ़ौजी सवारों से खबर ली। इस तरह उसने प्रजा पर अपना पूरा रोब जमा लिया। कोई भी सिर न उठा सकता था। इसने सरगोसा में राजकीय सेना रक्खी ग्रौर स्पेन को विद्रोहों से निर्भय कर दिया।

इस समय स्पेन का पराक्रम ग्रौर साहस असामान्य समझा जाता था। इसका प्रताप इसके विस्तृत राज्य से प्रतीत होता था। स्पेन के लोग कट्टर कैथालिक-धर्मावलम्बी थे। इनकी इन्किज़िशन नामक अदालत दिनो दिन जोर पकड़ती जाती थी।

इसी समय सुप्रसिद्ध मार्टिन ल्यूथर के अनुयायी प्रोटेस्टेंट लोग नवीन विशुद्ध मत स्वीकार करके कैथोलिक मत के प्रधान पोप के पाखंडों से पीछा छुड़ा रहे थे। अपने मत को बढ़ाने तथा प्रोटेस्टेंटों का नाश करने के लिए चार्लस पंचम ने उपर्युक्त अदालत के साथ "पवित्र कार्यालय" भी स्थापित किया था। उस बीज का वृक्ष अब तैयार हुआ। इस कार्यालय की यह आज्ञा थी कि यदि किसी जनसमूह में या जहाजों में कहीं पर कोई भी चिन्ह अन्य मतावलंबी होने का पाया जावे तो

उन्हें जन्म भर गुलामी भोगनी पड़े तथा उन जहाज़ों का कुल माल व असबाब जब्त कर लिया जाय। यह राजनैतिक अस्त्र धर्म की टट्टी के पीछे से फिलिप के हाथ में पोप के बल से ज़ोर पकड़ कर अपना काम कर रहा था, हजारों साहसी फरासीसी एव अँगरेज़ लोग दिनों दिन इस के पजे में आकर अपने प्राण खोते थे।

स्काटलैंड की रानी मेरी इस समय इँगलैंड के कैदखाने में पड़ी थी। यह भी कैथालिक मत की थी। उधर अँगरेज लोग अपने मजहबी जोश में थे। स्पेन यह चाहता था कि राजा कैथोलिक हो, तो प्रजा भी विशेषत उसी मत को ग्रहण करे। इस विचार से स्पेन ने मेरी का पक्ष लिया और इँगलैंड पर एक प्रचण्ड आक्रमण करने के लिए गुप्त रूपसे प्रकाण्ड प्रयत्न शुरू किये। फिलिप ने एक बड़ा भयानक जहाज़ों का बेड़ा तैयार किया। इस में सैकड़ों बड़े बड़े जहाज, असख्य योद्धा और अपरिमित भोजन-सामग्री थी, परन्तु इस का मुख्य हाकिम निरा मूर्ख था। हाकिंस नामक एक अँगरेज व्यापारी भी "इन्किजिशन" न्यायालय की आँच से झुलस चुका था। उसने अपनी विलक्षण बुद्धि तथा पराक्रम से पूरा बदला निकाला। भेद ही भेद स्पेन के सारे छिद्र जान कर इसने और विख्यात ड्रेक ने कई बार स्पेन को दिक किया और उसके नाकों दम कर दिया।

१५८८ में जब प्रकाण्ड नौका-समूह ने प्रस्थान किया, तब इँग्लैंड की रानी एलिज़बेथ के पास इस समय ऐसी कोई युक्ति न थी कि वह अपने देश को इतने भयकर आक्रमण से बचाए। विषम

समुद्री युद्ध ठन गया और साहसी अँगरेज जहाजियो ने और कुल देश ने एलीजवेथ की मदद की।

स्पेन देशीय नौकासमूह का प्रबन्ध और शासन बिलकुल खराब था। इधर फ्रोबिशर, गिलबर्ट एवं ड्रेक इत्यादि अत्यन्त चतुर एवं पराक्रमी और सामुद्रिक जीवन में बहुत निपुण थे। बुद्धिमानी के साथ इन थोड़े से अँगरेज नाविकों ने स्पेन के प्रचड जहाजी बेड़े को तितर बितर कर दिया। ईश्वर ने भी इस समय इँगलैंड की सहायता की। एक बड़ी भारी आँधी चल पड़ी और स्पेन का सारा नौकासमूह बिलकुल तहस नहस हो गया। यदि यह दैवी आपत्ति स्पेन के विरुद्ध न उठ पडती तो वास्तव में इँगलैंड को जीतने के लिए इसे बहुत कुछ आशा हो सकती थी। इस नौका-समूह के सर्वनाश से स्पेन को बहुत कुछ चोट पहुँची।

इस करारी हार से स्पेन की प्रभुता में पूरा बट्टा लग गया और आज ही से इस राज्य ने अवनति के मार्ग पर पैर रक्खा। फिलिप पर पूरी ग्रह दशा थी। आरमेडा के साथ असत्य धन और प्राणियो का नाश हुआ। इधर स्पेन की प्रजा टैक्सों की अधिकता से पीड़ित होकर हाहाकार मचा रही थी। इस महा-राज्य का सगठन अब टूटना ही चाहता था। फिलिप यह कलंक का टीका दूसरों के लिए छोड कर १५९८ में चल बसा।

१४—फ़िलिप तृतीय और चतुर्थ एवं चार्ल्स द्वितीय।

(१५९८—१७००)।

फिलिप तृतीय (१५९८—१६२१)। इस पर पादड़ियों और पटरानियों का पूरा प्रभाव था। यह अच्छे विचार वाला था। इसको धर्मसम्बन्धी रीतियों के कारण प्रबन्ध करने को समय ही न मिलता था, इसलिए उसने सारा राज्यभार लारमा के तअल्लुकदार के हाथ में दे दिया। जिसे राजकीय प्रबन्ध के लिए कभी .फ़ुरसत ही न हो, उसे भला कौन "सुयोग्य" कह सकता है। यह फिलिप २१ वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठा।

१६०१ में सिक्के वालों पर एक नया राजकर लगाया गया। यहाँ के प्रधान पुरुषों ने इसे अपनी स्वतन्त्रता का बाधक समझा और दूसरा राजा चुनने की धमकी दी। इससे फ़िलिप डर गया और अपनी आज्ञा वापस लेली।

यह अपने धर्म में इतना कट्टर था कि इसे काफिर प्रजा के होने की अपेक्षा प्रजा का न होना ही स्वीकार था। इसने हुक्म दे दिया कि कोई पुरुष फारसी न बोले और न लिखे तथा कोई मुसलमान अपने रस्मोरिवाज न काम में लावे। इस बात पर उन लोगों ने कुछ अशान्ति प्रकट की। धमकाये जाने पर बहुतेरे शान्त हो गये और शेष पकड़ कर अफ्रीका भेज दिये गये। फिलिप तृतीय को इतने पर भी तृप्ति न हुई और १६०९ में इसने यह आज्ञा दी कि तीन दिन के अन्दर कोई भी मुअर या

मुसलमान स्पेन में न रह जाय, यदि कोई रह जायगा अथवा रख लिया जायगा, तो उसे प्राण दण्ड दिया जावेगा।

राजा की आज्ञा ने स्पेन को सदैव के लिए शोचनीय अवस्था में डाल दिया। स्पेनियों ने खेती आदि को नीच कर्म समझ कर मुअर लोगों के मत्थे छोड़ दिया था। देश की कारीगरी, खेती और व्यवसाय सब इन्हीं लोगों के हाथ में था, और वास्तव में उन लोगों ने उन्नति भी की थी। इस तरह कारोबार को बहुत हानि पहुँची और उसका व्यापार-रूपी अग निर्बल ही होता गया।

व्यवसाय का लोप हो जाने से स्पेन को अन्य देशों से सम्बन्ध करना पड़ा। इँगलैंड, फ्रांस, आस्ट्रिया और स्पेन में सन्धि हो गई थी, इसलिए स्पेन राज्य इस समय फिर थोड़ा बहुत दृढ़ हुआ, परन्तु मजहबी जोश फिर जगा। १६१८ में लारमा के तअल्लुकदार ने अपना पद त्याग दिया और उज़ेदा का तअल्लुकदार उसका पुत्र उस जगह पर नियत किया गया। इसी समय से तीस साल का संग्राम शुरू हुआ। १६१८ में राज विद्रोह हुआ। १६२० में फ़िलिप ने फ्रांस-राज फर्डीनँड की सेना की पूरी सहायता की। इसकी मदद से आस्ट्रिया में "व्हाइट हिल" आदि में इसने कई मैदान जीते।

फिलिप अपनी पुत्री को फ्रेडरिक पचम के जामाता जेम्स प्रथम के पुत्र को देना चाहता था और वर्तमान युद्ध से इस विचार और द्रव्य के नाश को देखकर वह इस संग्राम से अपना हाथ खींचना ही चाहता था, पर १६२१ में उसकी मृत्यु हो गई।

इसके समय में स्पेन का साहित्य एक अच्छी श्रेणी में था। "डानक्विहोटी" नामक हास्यरस-पूर्ण उपन्यास का लेखक सरवैन्टीज इसी समय में यहाँ हुआ। इसके सिवा लोपडिवेगा, केलेरन और वलेजक्वेज आदि और प्रसिद्ध लेखक थे।

फ़िलिप चतुर्थ (१६२१–६५)। यह पिता की भाँति राजकाज से दूर रहता था, जो समय इसका पिता पूजापाठ में बिताता था, उसे यह शिकार और खेल तमाशे में। उसके मन्त्री ओलिवेरस के हाथ में सब काम था। ओलिवेरस बड़ा यत्नशील पुरुष था, यह फ़िलिप द्वितीय की नीति का अनुसरण करके स्पेन को फिर ऊँचे पद पर* पहुँचाने का उद्योग कर रहा था, परन्तु फ्रांस के रिशलिये के सामने इसकी बुद्धि चकराती थी। इसने अपने देश के बल का कुछ भी विचार न किया और योरोप की अन्य शक्तियों के समूह में सहसा घुस पड़ा। १६२१ में युद्ध आरम्भ हो गया। सात वर्ष बाद डच लोगों ने स्पेन के द्रव्य से परिपूर्ण जहाज़ों को लूट लिया, और इस देश से मलाका, लंका, जावा इत्यादि द्वीप भी छीन लिये। निदरलैंड का उत्तरी भाग लेना तो दूर रहा स्पेन के लिए दक्षिणी भाग की रक्षा भी कठिन हो गई। इधर रिशलिये विजय करता हुआ इटली पहुँचा। इससे वहाँ भी स्पेन का महत्व डगमगाने लगा, उधर जर्मनी का गुस्टवस अडाल्फस† भी स्पेन से जल रहा था।

---

* इस पुस्तक माला के फ्रांस इतिहास के ५० पृष्ठ से मुक़ाबिला कीजिए।
† इस माला के जर्मन इतिहास के ३१ पृष्ठ से मुक़ाबिला कीजिए।

शीघ्र ही रिशलिये ने निदरलैंडस और इटली से स्पेन का सबन्ध तोड दिया और अपना प्रताप इटली में फैला दिया। इस ने हालैंड देश से संधि करली। यहाँ स्वय स्पेन में अनेक उपद्रव उत्पन्न हो गये और स्पेन के सामुद्रिक बल पर पानी फिर गया। अब ओलिवेरस को बाहरी झंझट को छोड़ कर अपना राज्य सम्हालने की सूझी। यह पृथक् पृथक् प्रांतों को पृथक् पृथक् कानूनों तथा प्रधान पुरुषों को दूर करके केवल सम्राट् को शिरमौर बनाने और एक कानून के प्रचार का प्रबंध करने में लगा। इसने १६४० में एक कानून निश्चित कराया कि कुछ समय के लिए स्पेन के सब सुडौल और बलवान् लोगों को सेना में अनिवार्य रूप से काम करना चाहिए। इस पर रिशलिये की मन्त्रणा से विप्लव हुआ। पुर्तगाल में भी यही हाल हुआ और राजघराने का एक मुख्य पुरुष जान ब्रगजा वहाँ का राजा बनाया गया। १६४३ में ओलिवेरस को अपना पद त्यागना पड़ा और फिलिप ने सारा भार अपने सिर लिया।

१६४२ में रिशलिये की मौत से फरासीसियों की जीत में कुछ भी अन्तर न पड़ा। १६४३ में 'आँञ्हियाँ' ने राक्रोआ में विख्यात विजय प्राप्त की। इधर लाचार होकर स्पेन को हालैंड से सधि करनी पड़ी।

अब फ्रांस को छोड कर सब जगह शांति थी। आँञ्हियाँ अब स्पेन का प्रधान सेनापति हो गया। इसने निदरलैंडस का बहुत कुछ भाग फ्रांस से ले लिया और केटेलस को भी अपने तहत में

लाया। तब भी स्पेन की प्राचीन युद्धशैली गुस्टवस अडाल्फ़स के प्रचलित नवीन उपायों का सामना नहीं कर सकती थी।

इन शक्तियों को शिथिल दशा में पाकर इगलैंड को अच्छा अवसर मिला, मतलब बनाने के लिए वहां के पंचायती राज्य के अधिष्ठाता क्राम्वेल ने फ्रांस को सहायता दी और डनकिर्क इत्यादि स्थान पाये। इस समय स्पेन की सफलता असंभव थी। १६५९ में स्पेन और फ्रांस में पेरेनीज़ की संधि हुई और यही पहाड़ दोनो राज्यो की सीमा नियत हुआ। फ्रांस ने निदरलैंडस पाया और आंजिहयों के रईस को क्षमा प्रदान की। केटेलोनिआ का सूबा स्पेन को मिला। इस संधि से फ्रांस पुर्तगाल को सहायता नहीं दे सकता था, परंतु लुई चतुर्दश ने पुर्तगाल वालों को छिप कर सहायता दी। १६६३ में एक फ्रेंच जनरल ने आस्ट्रिया के डान जान को हरा दिया और १६६५ में स्पेन की सेना को विला विसियासा के मैदान में परास्त किया। पीड़ित अवस्था में फिलिप इसी साल स्वर्ग को सिधारा।

चार्लस द्वितीय (१६६५–१७००)। यह अभी ४ वर्ष का था। उस की माता मेरिआ एक खास सभा द्वारा कार्यनेत्री नियत की गई थी। फ़ादर निदर्ड इसका चतुर और अनुभवशील मंत्री था। इसने विशेषत राज्य के दोषों की ओर ध्यान दिया, कर्मचारियों के मासिक वेतन नियत किये और व्यापार की बाधायें दूर कीं।

लुई चतुर्दश अपनी पत्नी के नाते से निदरलैंडस की रियासत पर अधिकार चाहता था। स्पेन ने इससे इन्कार किया। इस

पर फ्रांस ने कई सूबे लूट लिये। १६६८ में आइला-शपेल की संधि हो गई। फ्लैंडर्स का कुछ भाग फ्रांस को मिला और पुर्तगाल स्वतन्त्र हो गया।

वर्तमान मन्त्री फ़ादर निदर्ड 'स्टीरिआ' का वासी था। स्पेनी रईस इससे वैर रखते थे। इन सबने एका कर के आस्ट्रिया के डानजान को मुखिया बनाया। परिणाम यह हुआ कि फ़ादर निदर्ड निकाल दिया गया। १६७२ में रानी ने 'फरनैंडो वेलेंजुएला' को मन्त्री स्वीकृत किया और उसे रईसी का पद प्रदान किया। रईस लोग फिर नाराज हो गये और रानी को निकाल के डान जोन को अध्यक्ष बनाया। जान ने फ्रांस से मेल करने के लिए चार्लस का विवाह वहाँ ठीक किया। इधर लुई चतुर्दश हालैंड पर आक्रमण कर चुका था। १६७९ में निमग्वा की संधि हो गई, जिससे फ्रांस को सब तरह से फ़ायदा रहा। जान नैराश्य की आग से जलकर शीघ्र ही परलोकवासी हुआ।

चार्लस द्वितीय अब स्वतन्त्र हो गया। बचपन से ही इसका स्वास्थ्य खराब था। यह जैसा शरीर में बलहीन था वैसा ही बुद्धि से खाली था। १६८० में मेडिना सेली मन्त्री नियत हुआ, चार्लस की निर्बलता से पूरा लाभ लुई चतुर्दश ने उठाया। वह इस पर आतंक ही जमाता रहा। कई एक स्थान इसने अनायास छीन लिये। १६८५ में मेडिना ने अपने पद को त्याग दिया। नवीन मंत्री ने आस्ट्रिया से मिल के फ्रांस पर आक्रमण करना चाहा, परन्तु तब भी फ्रांस ने स्पेन को नीचा ही दिखाया। १६९७ में रिस्विक की संधि से शांति स्थापित हुई।

अब स्पेन के उत्तराधिकार के बारे में तर्कनायें होने लगीं। चार्लस ने बवेरिया के राजकुमार जोज़ेफ़ फ़र्डीनैंड को अपना उत्तराधिकारी बनाया। लुई अलग ही अपना दांव लगाये बैठा था। यह अपनी कूटनीति सोचही रहा था कि जोज़ेफ़ राजकुमार की मृत्यु हो गई। इधर लुई ने पोप तथा स्पेन के प्रभावशाली पुरुषों को मिला लिया था। बुड्ढे चार्लस को लाचार होकर १७०० में लुई के पौत्र फ़िलिप को अपना उत्तराधिकारी मानना पड़ा, केवल इस शर्त के साथ कि यह फिर फ़्रांस राज्यासन का अधिकारी न रहेगा।

१५—बूर्बों वंश।

स्पेन को निर्बल दशा में देख कर योरोप के अन्य राज्य इस पर अपना अधिकार जमाने के लिए ललचा रहे थे। इनके चित्त में यह भास रहा था कि जो अपने पराक्रम से इस देश को आ दबोचे यह उसी का हो जायगा।

१७०१ में "बड़े ऐक्य" नामक अभिमन्त्रण के अनुसार स्पेन के कुछ सूबे आस्ट्रिया को और स्पेनी रियासत के सामुद्रिक सुविधा के कुछ स्थान फ्रांस को मिलना चाहिए थे। १७०३ में पुर्तगाल भी उक्त संधि में मिल गया और १७०५ में फ़िलिप को स्पेन की राजधानी मेड्रिड से निकाल कर आस्ट्रिया के उत्तराधिकारी को चार्लस तृतीय के नाम से आभूषित करके यहाँ की राजगद्दी पर बिठाया। १७०६ में फ़िलिप फिर जीता। १७१० में चार्लस और

उसी भाँति राजा हुआ और हटा भी दिया गया। १७११ में यह संधि टूट गई, और इंगलैंड, फ्रांस, हालैंड और स्पेन में यूट्रे की संधि हुई। इससे कुछ सूबे स्पेन से निकल गये और इगलैंड को विशेष लाभ रहा।

फिलिप (१७००—४३)। यह संकीर्ण हृदय था। इसकी प्रथम स्त्री १७१४ में दो पुत्र छोड़ कर मर गई। इसका दूसरा विवाह पारमा-नरेश की भतीजी एलिज़बेथ से हुआ। इस रानी ने उसे अपना पूरा दास बना लिया था। उचित रीति से प्रथम पत्नी के पुत्र राज्याधिकारी थे। अपनी संतान का तिरस्कार देख-कर एलिजबेथ ने त्रिया-चरित्र फैलाया।

अलबेरोनी एक माली का पुत्र था और यह स्पेन में एक रसोइया तथा मसखरे की हैसियत में आया था। एलिज़बेथ का विवाह इसी ने कराया था, इसी कारण यह सचिव पद पर पहुँचा। वाणिज्य, व्यापार और सैनिक विभागों में इसने सुधार किये, पर स्पेन की समुद्रीय शक्ति पर इसका विशेष ध्यान था। इसकी प्रतिज्ञा थी कि पाँच वर्ष की शांति में मैं स्पेन को फिर पहले वाली ऊँची दशा को पहुँचा दूँगा। ये पाँच वर्ष पचास युग के सदृश हो गये। १७१७ में फ्रांस, हालैंड और इङ्गलैंड में स्पेन के विरुद्ध "तीन शक्तियों का अभिमन्त्रण" हुआ। १७१८ में आस्ट्रिया भी उनसे मिल गया और ऐडमिरल बिंग ने स्पेन को एक समुद्री लड़ाई में हराया। अलबेरोनी ने इङ्गलैंड पर कई ओर से हमला करना चाहा, पर सब प्रयत्न निष्फल हो गये। इतनाही नहीं, अङ्गरेजों

ने इन के जहाज किनारे पर जला भी दिये। १७१९ में अलबे-रोनी को देश निकाला हो गया। अब स्पेन को सुलह करनी पड़ी और यूट्रे सधि की सब शर्तें माननी पड़ीं। कुछ रियासत दूसरी रानी के पुत्रों को भी मिली।

फिलिप ने फ्रांस से मेल कर लिया। इसने अपने ज्येष्ठ पुत्र का विवाह फ्रांस के अध्यक्ष की कन्या से किया और अपनी पुत्री का भी ब्याह लुई पचदश से तै कर लिया था। उसी समय में अध्यक्ष की मृत्यु हो गई। कुछ काल के लिए फिलिप ने सब काम अपने पुत्र के सिपुर्द करके राज्य से अपना सबन्ध तोड़ दिया। इससे फिलिप यह समझता था कि पचदश लुई की मृत्यु होने से उसका पुत्र या पुत्री फ्रांसराज्य की अधिकारिणी होगी और तब मौके से वह स्वय दोनों देशों का राजा बन जावेगा।

रिपेर्डो नामक एक साहसी पुरुष ने रानी से यह कहा कि आस्ट्रिया से सधि करके काम निकल सकता है। ऐसा करने पर फ्रांस से विगाड़ होगया। उन्होंने राजकुमारी को स्पेन वापस भेज दिया और लुई का विवाह अन्यत्र ही कर लिया। १७२५ में आके सधि हुई और तब सब झगड़े समाप्त हुए।

अब रिपेर्डो प्रधान मंत्री बनाया गया, परन्तु इस पद को पाकर वह इतना मदान्ध हो गया कि अन्त में उसे भी देश से निकाल देना पड़ा। अनन्तर वह मुसलमान हो गया और १७३७ में मर

गया। १७२९ में सेवील की संधि हुई इससे एलिज़बेथ का ज्येष्ठ पुत्र पारमा रियासत का उत्तराधिकारी निश्चित हुआ।

स्पेन का दाँत आस्ट्रिया पर था। इस कारण उसने १७३३ में छिपकर फ्रांस से संधि की। फ्रांस ने इन झगड़ों से कुछ भी लाभ न पाकर १७३५ में आस्ट्रिया से संधि कर ली। फ्रांस के बल से स्पेन इंगलैंड से बदला लेना चाहता था। इसने (स्पेन) अँगरेजों के साथ बहुत अत्याचार किये। १७३९ में इंगलैंड भी जगा और इसने स्पेन को परास्त किया। फिर फिलिप को सदा नीचा ही देखना पड़ा और १७४३ में यह परलोकगामी हुआ। अब फिलिप की पहली रानी का पुत्र फर्डीनेंड षष्ठ (१७४३—५९) गद्दी पर बैठा। दूसरी रानी ने अपने पुत्रों की भलाई के लिए अनेक झगड़ों के बीज वो रक्खे थे। फर्डीनेंड को क्या पड़ी थी कि सौतेले भाइयों के लिए देश भर के झंझट मोल लेता फिरे। उसने उनका कुछ भी विचार न किया। इससे रानी हताश हो कर एकांतवास करने लगी।

यद्यपि फर्डीनेंड ने अपने भाइयों के लिए कोई युद्ध नहीं किये, पर वह इतना अवश्य समझता था कि भाई को कुछ भी रियासत न मिलना स्पेन की मानहानि है। १७४२ में आई-ला-शपेल की संधि हुई और उसके सौतेले भाई डान फ़िलिप को पारमा इत्यादि सूबे मिले। इसमें शर्त यह थी कि यदि डान फ़िलिप का वंश किसी समय समाप्त हो जाय तो यह रियासत फिर आस्ट्रिया में मिल जायगी।

अपने पिता की भांति फर्डीनैंड कमजोर था। यह व्यर्थ विवादों से अपने आनन्द में बाधा नहीं आने देता था। १७५६ में सात साल वाले संग्राम में लड़ने वाली शक्तियाँ इसे अपनी अपनी ओर मिलाना चाहती थीं, पर यह उदासीन रहा। इस समय की शान्ति का यह प्रभाव हुआ कि अनेक युद्धों से क्षीण प्रजा फिर चैतन्य होने लगी।

१६—चार्लस तृतीय और चार्ल्स चतुर्थ।

(१७५९–१८०८)।

१७३५ में स्पेन और आस्ट्रिया में जो सन्धि हुई थी उस से रानी के बड़े पुत्र डान कार्लो को सिसिली के दोनो द्वीपों का राज्य मिला था। १७५९ में यह चार्लस तृतीय (१७५९–८८) के नाम से गद्दी पर बैठा।

यह इगलैंड से अपना बदला लेना चाहता था, अत १७६१ में इसने फ्रांस से मेल कर लिया। पिट इगलैण्ड का महामन्त्री स्पेन की चालाकी समझ गया और इसने अपने देश की सामुद्रिक शक्ति को बढाया। १७६२ में अँगरेजों ने पुर्तगाल पर चढाई की और दोनो राज्यों की सम्मिलित सेना को मैदान में पराजित किया। १७६३ में पैरिस की सन्धि हुई। फ्रांस को विशेष हानि रही और स्पेन का उद्देश बिलकुल सिद्ध न हुआ।

स्पेन और पुर्तगाल से अमेरिका के बारे में झगडा हो रहा था, पर राजा जोजेफ की मृत्यु से १७७७–८ में संधि हुई जिससे

पुर्तगाल ने सदा के लिए स्पेन का शुभचिंतक बना रहना स्वीकार किया। यह सब स्पेन के मन्त्री फ्लोरिडा ब्लांका की चतुरता थी।

प्रायः सभी शक्तियां इस समय इँगलैंड से असन्तुष्ट थीं। पुराना वैरभाव निकालने के लिए स्पेन को यह अच्छा अवकाश मिला। स्पेन ने मिनारका द्वीप ले लिया और अँगरेजों के बन्दरगाह जिब्राल्टर को भी घेर लिया। इँगलैंड अपनी समुद्री प्रतिष्ठा के भंग हो जाने के भय में था, परन्तु अन्य शक्तियाँ एक दूसरे के प्रतिकूल थीं, इससे १७८२ में अँगरेज़ों ने एक एक को हराया। १७८३ में वर्साइ की सन्धि हुई। चार्लस को लाचार होकर जिब्राल्टर छोड़ देना पड़ा।

इसने गिर्जाघरों को ज़मीन देने की मनादी करदी और मठ कम करा दिये। इसने "इन्किजिशन" नामक न्यायालय को अपने हाथ में कर लिया और व्यापार की बड़ी उन्नति की। इसने नहरें बनवाई और खेती की तरक्की की। इस समय आबादी की दूनी बढ़ती हुई। यह सब चार्लस के मन्त्रियों के उत्तम प्रबन्ध का फल था। इस सम्बन्ध में डी' आर्नेडा का नाम विशेषतया स्मरणीय है। यद्यपि यहां इस समय में बहुत से सुधार हुए, तथापि पहली दशा के देखते बहुत कुछ अन्तर था क्योंकि लोग अब भी आलसी और मूढविश्वासी थे। १७८८ में चार्लस के जीवन का अन्त हुआ।

अब चार्लस चतुर्थ (१७८८–१८०८) राजा हुआ। स्पेन को अपना पुराना बड़प्पन पाने के लिए समुद्री शक्ति की विशेष आवश्यकता थी। इसके सिवा चार्लस के लिए अँगरेज़ो को परास्त

रना भी आवश्यक था। उनसे अकेले सामना करना स्पेन की
ाक्ति के बाहर था। सहायता की आशा केवल फ्रांस से ही थी,
रन्तु वहाँ विषम विप्लव फैला हुआ था, इसलिए मंत्री
फ्लोरिडा ब्लांका ने यह सोचा कि यदि विद्रोह शांत होजाय,
ा कार्य सिद्ध हो। इस उद्योग के लिए रुपया और लडाई लडने की
ावश्यकता थी। रुपये के खर्च से रानी खफा होगई और १७९२
ें ब्लांका को निकाल कर उसने डी'आर्नेडा को मन्त्री बनाया।

इस समय जो रानी तथा चार्लस की खुशामद करता था
सके लिए यहाँ कुशल थी, परन्तु डी' आर्नेडा स्पष्टवक्ता था,
सलिए इसको भी अपनी जगह से हटना पडा। अब रानी ने अपने
मित्र गोडाय को मंत्री बनाया। यह राजा चार्लस का भी
मुँहलगा और पूरा गँवार था।

१७९३ में फ्रांस के राजा लुई को विद्रोहकारियों ने फाँसी
देदी। इस चार्लस ने यहाँ से विप्लव को समाप्त करने के लिए फ्रांस
को सेना भेजी। प्रबन्ध की खराबी के कारण स्पेन की बडी दुर्दशा
हुई। स्पेन वालों को यह बडा बुरा मालूम हुआ। स्पेन में भी
विद्रोह उठ पडा। अब फ्रांस ने उलटा स्पेन पर आघात किया।
अन्त में बेसल की संधि हुई। इससे स्पेन को कोई विशेष हानि
नहीं हुई।

१७९६ में स्पेन और फ्रांस में संधि हुई जिससे एक ने दूसरे
की युद्ध में सहायता करने की प्रतिज्ञा की। इनकी सम्मिलित सेना
को अँगरेजों ने सेंट विनसेंट की लडाई में हराया। इससे स्पेन की
बहुत हानि हुई। सरकारी खजाना समाप्त होगया था और आय

के रास्ते भी बन्द होगये थे। अँगरेज़ों ने मौका देख कर स्पेन की प्रजा को खूब भड़काया। गोडाय ने यह देखकर कि अपने बनाये अब कुछ नहीं बनना है, मन्त्रित्व का पद और दो आदमियों के लिए खाली कर दिया। उनमें से एक का स्वास्थ्य विष के प्रयोग से बरबाद कर दिया गया था, इससे दूसरे को मन्त्रित्व का भार मिला। पहले पुरुष के स्थान में एक कैवलवो नामक उत्साही सुधारक नियत किया गया। बोनापार्ट के अभ्युदय तक यहाँ कुछ शांति रही।

कुछ समय बाद गोडाय रानी की कृपा से फिर अपने पहले पद पर पहुँच गया। स्पेन इस समय फ्रांस के अधीन हो रहा था। १८०१ में नेपोलियन की ओर से स्पेन को पुर्तगाल से लड़ना पड़ा। गोडाय सेनापति होकर गया था। वहाँ इसने अपनी ओर से संधि करली। नेपोलियन इसकी अनुचित स्वतंत्रता से इस पर नाराज़ हुआ और उसने इस संधि को न माना। इतनाही नहीं, वरन् अङ्गरेज़ों से संधि करने के समय नेपोलियन ने स्पेनीय राज्य के कई सूबे बेपूँछे बताये दे दिये और स्पेन चूँ तक न कर सका।

तीन वर्ष के लिए स्पेन में शान्ति रही और यह धीरे धीरे फिर पोप के जाल में फँसने लगा। १८०३ में बोनापार्ट को धन की आवश्यकता हुई तब उसने स्पेन के साथ एक नई संधि की और उससे प्रायः २३७५००) की मासिक सहायता देने का वचन ले लिया। अब स्पेन और भी आपत्ति में पड़ा। इसकी शेष समुद्री शक्ति ट्राफलगर इत्यादि संग्रामों में समाप्त हो गई।

स्पेन के राजकुमार का विवाह नेपल्स नरेश के यहाँ हुआ था। इससे नेपोलियन नाराज था। इसकी स्त्री की मृत्यु हो गई और इसने अपना दूसरा विवाह बोनापार्ट की बेटी से छिपकर पक्का कर लिया। गोडाय को यह भेद मालूम हो गया और उसने यह हाल चार्लस से कह दिया। गोडाय चाहता था कि राजकुमार क़ैद कर लिया जाय। नेपोलियन स्पेन को लेना ही चाहता था और इस अवसर को पाकर उसने राजकुमार की सहायता के बहाने से (१८०८) स्पेन को सेना भेजी। राजा और राजमन्त्री डर कर भाग खड़े हुए।

१७—नेपोलियन का आक्रमण और बूर्वा वंश के शेष राजा लोग।

नेपोलियन ने आते ही स्पेन पर अधिकार जमा लिया। उसे इतना अवकाश न था कि स्वयं इस राज्य का प्रबन्ध करे। पर वह यह चाहता था कि राज्य उसके हाथ से न जाय तथा ऐसा प्रबन्ध भी न हो जिससे निर्दयता एवं अनीति वहाँ आकर अपना अड्डा जमावे, इसलिए उसने पिता, पुत्र और मंत्री को पकड़वा मंगाया और उन्हें दरबार में अपने सामने खड़ा करके पूछा कि क्या पिता को राज्य देना चाहिए? चार्लस के इनकार करने पर उसने अपनी इच्छानुकूल अपने भाई जोज़ेफ़ बोनापार्ट को यहाँ का राजा बना दिया।

स्पेनवालो ने इस पर बडा गडबड किया श्रीर लडाइयों की भरमार से फरासीसियो के नाकों दम कर दिया। जोज़ेफ़ को यहाँ चार महीने भी रहना कठिन हो गया श्रीर उसे लाचार होकर भागना पडा। तब चार्लेस का पुत्र फर्डीनँड राजा बनाया गया श्रीर ३४ प्रतिनिधियों की एक कार्यकारिणी समिति सगठित की गई।

स्पेनियो में शूरता की कमी न थी पर इनमें उचित नियम श्रीर सगठित बल का अभाव था, इसलिए नेपोलियन के आते ही सब झगडा शांत हो गया। जोज़ेफ़ फिर गद्दी पर बैठा। यह स्वतत्र राज्य करना चाहता था, परन्तु नेपोलियन स्पेन को अपने बडे भारी राज्य का एक अश मात्र बनाने वाला था।

इधर फ्रेंच लोगो ही में अनबन हो उठी श्रीर पुर्तगाल में वीर वेलिंगटन का तअल्लुकदार डटा हुआ था। १८१० में अपराजित स्पेन ने एक अपना स्वतंत्र राज्य पृथक् स्थापित किया। केडीज उसकी राजधानी हुई।

सुधारको को यह अच्छा अवसर हाथ लगा। "इन्क्विजिशन" नामक अदालत तोड दी गई। प्रेस को स्वतत्रता मिली। पादरियों की रियासते युद्धव्यय के लिए जब्त करली गई। रईस श्रीर पादरी इस बात के विरुद्ध थे।

१८१२ में वेलिंगटन मेड्रिड पहुँच गया। जोज़ेफ़ को वेलेन्शिया भागना पडा। १८१३ में विट्टोरिया के मैदान में वेलिंगटन ने एक श्रीर विजय प्राप्त की श्रीर जोज़ेफ़ स्पेन छोड कर भाग गया।

फर्डीनैंड सप्तम (१८१४—३३)। यह अब नेपोलियन से छूट कर मेड्रिड लौट आया और राजा बनाया गया। यह राजनीति बिलकुल न जानता था और झूठा, घमंडी और व्यभिचारी था। गद्दी पर बैठते ही इसने अपने पहले के विचारों को छोड़ दिया।

इसके समय में रईसों पर कर माफ कर दिया गया। महन्तों की गद्दियाँ स्थापित हो गई। "इन्क्विजिशन" की स्थापना फिर हुई। स्वतंत्र दल वालों पर अत्याचार होने लगे। छ वर्ष स्पेन का यही हाल रहा। १८१९ में फर्डीनैंड को फ्लोरिडा अमेरिका के हाथ बेंचना पड़ा। इन सब बातों से स्पेन में विद्रोह फैलने लगा। गुप्त सभायें स्थापित होने लगीं। १८२० में केडिज में बलवा हुआ। राजा यद्यपि वीर था, पर उसके साथी कायर थे, इससे राजा को हथियार रख देने पड़े और उसके पक्ष के लोग कार्य्य-कारिणी सभा से निकाल दिये गये इस तरह स्वतंत्र प्रतिनिधियों का प्रवेश इस सभा में हुआ। इसकी आज्ञा से "इन्क्विजिशन" न्याया-लय फिर तोड़ा गया। गिर्जाघरों का कर माफ हो गया, प्रेस को स्वतंत्रता मिली और सभाये खुलना आरम्भ हो गई। इससे सर्वसाधारण के प्रतिनिधियों की पूरी जीत हुई। १८२२ में इन्होंने केडीज के विद्रोह के नेता रीगो को अपना सभापति चुना।

"पवित्र अभिमन्त्रण" ने स्पेन से अपने यहाँ पुराना प्रबन्ध कायम रखने का आग्रह किया, परन्तु इसने न माना। तब फ्रांस एक लाख सैनिक लेकर चढ़ आया और इसे पराजित किया। फर्डीनैंड मौका पाते ही शासन करने लगा और इसने पुरानी बातों का प्रचार फिर किया।

इसके अंतिम दिन आनन्द से बीते। १८२९ में इसका विवाह नेपल्स की मैरिया क्रिश्चीना से हुआ। इन दोनो से इसेबेला नामक एक सुन्दरी पुत्री उत्पन्न हुई।

१८३३ में फ़र्डीनैंड का देहान्त हो गया और इसाबेला स्पेन की रानी हुई। १८४० तक इसकी माता अध्यक्ष रही, इसके बाद वह फ़्रांस को चली गई और एस्पार्टेरो नामक एक वीर सेनापति उस पद पर नियत किया गया। इसकी बढ़ती देख के अन्य सेनापति इससे द्रोह मानने लगे, अतएव यह भी अपनी जगह पर बहुत दिनों तक न ठहर सका। १८४३ में वह देश से निकाल दिया गया। इसाबेला के वयस्क होने पर उसकी माता स्पेन को लौट आई। इसाबेला की सगाई उसके चचेरे भाई फ़्रैंसिस् से हुई।

इसाबेला द्वितीय (१८३३—७०) से प्रजा अप्रसन्न रहती थी। इसका राजत्वकाल नाना प्रकार के झगड़ों और जाल व फ़रेबों का घर बन गया था। इसका कारण विशेषतया इसका असन्तोषजनक आचरण था। १८६६ में इसने कुछ स्वतंत्र पक्ष वालों को देश से निकाल दिया। १८६८ में इन लोगों ने स्पेन में विद्रोह का झन्डा खड़ा किया। सर्वसाधारण ने इन लोगों से सहानुभूति प्रकट की और इनकी सहायता की। इसाबेला को भाग कर फ्रांस में जाकर छिपना पड़ा।

लोगों ने १८७० में अओस्टा के अमेडर ज को सेनेट एवं चैम्बर का राजा चुना। दो सभाये स्थापित की गई। राजा को इन सभाओं की सम्मति के अनुकूल काम करना पड़ता था।

इस तरह वह बहुत दिनों तक काम को न चला सका और १८७३ में इसने इस पद को त्याग दिया।

इसके उपरान्त स्पेन का शासन कुछ समय के लिए एक स्वाधीन सभा के हाथ में रहा। इस प्रबन्ध से प्रजा असन्तुष्ट रही और आन्तरिक विवाद होने लगे। सेना की सहायता से विद्रोह का दमन कर दिया गया, फिर भी पूर्ण शान्ति न हुई।

शासन करने के लिए एक तरह से एक राजा की आवश्यकता थी। इसने अब अलफोंसो द्वादश (१८७४—८५) को राज्यासन दिया गया। यह उपर्युक्त इसाबेला का पुत्र था। अलफोंसो का प्रथम उद्देश्य यह था कि राज्य में शान्ति और उन्नति हो। इस संकल्प को वह पूरा न कर पाया और बीच ही में काल कवलित हुआ। अनन्तर इसकी विधवा स्त्री क्रिश्चीना स्पेन की शासनकर्त्री रही। १७ मई सन् १८८६ में इसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसको प्रजा ने सहर्ष अपना राजा स्वीकार किया।

१८—रानी क्रिश्चिना की अध्यक्षता।

(१८८६–१९०२)।

राज्य के प्रबन्ध के लिए १८७६ में एक संगठन तैयार किया गया था। उसके अनुकूल बालक राजा की माता क्रिश्चिना अध्यक्षा बनाई गई और कार्यकारिणी सभा को जिसमें कि उस समय के सनातन दल के मुख्य पुरुष मार्शल कैम्पो और कैनोवास डेल कैस्टिला मौजूद थे, शान्तिपूर्वक पूरे तौर से चलाती रही।

नये विज्ञान, नई ज्योति और नये विचारों की लहरों ने सारे राज्य में तहलका मचा दिया था और पुराने ढर्रे के शासन से उत्तम रीति पर काम चलते हुए नहीं दिखाई देता था, इसलिए कैनोवास ने रानी क्रिश्चिना को यह सलाह दी कि उदार दल के नेता सैगास्टा को बुला कर नई मन्त्रिसमिति बनाई जाय और देश की नई रोशनी को ध्यान में रखते हुए उसका उचित शासन किया जाय।

सैगास्टा बडा ही चतुर, अनुभवशील और महान् पुरुष था। यह विप्लव के बिलकुल विरुद्ध और वैकासिक उन्नति के पूरे तौर से पक्ष में था—इसकी नीति यह थी कि उन्नत प्रजा की ऊँची ऊँची अभिलाषों पर पूरा ध्यान देकर उन्हें सब तरह से राज्य के प्रबन्ध में स्वत्व दिये जायँ और उनकी उचित बात मानी जाय, परन्तु यदि वे इन बातों के लिए उद्दंडता करें और अशान्ति फैलावे, तो वे सब तरह दबाये जायँ और सांगठनिक राजसभा में किसी प्रकार से कोई निर्बलता न आने पावे। इसी विचार से कुछ समय तक इस बुद्धिमान् मन्त्री ने कैनोवास के साथ मिल कर काम किया। शीघ्र ही इसने अपने उदार दल के कई एक विद्वान् और प्रबल आदमी इकट्ठा करके अपनी मन्त्रि समिति तैयार की। इन लोगों ने "कैर्टीस" नामक स्पेन की बड़ी सभा का एक अधिवेशन किया और उसमें सनातनी दल के नेता कैनोवास के यत्न से सभी लोगों ने उचित रीति से सम्मति देकर और बिना किसी प्रकार का गड़बड़ किये राज्य-प्रबन्ध के उद्योग किये। सैगास्टा ने देश की शान्ति और सुख पर पूरा ध्यान दिया और अन्य देशों के साथ अपना सम्बन्ध ठीक करता रहा। इसी समय प्रजा-सत्तात्मक

राज्य के चाहने वाले लोगों ने विद्रोह किया, परन्तु वे कठोरता के साथ शान्त कर दिये गये।

रानी क्रिश्चिना कट्टर कैथोलिक मत की थी। इसने सब तरह पोप के बड़प्पन को माना और अपने देश पर उसका अधिकार स्थापित रक्खा। इसका परिणाम यह हुआ कि पोप ने भी सभी जरूरी स्थानों में रानी का पूरा पक्ष लिया और उस पर अपना हाथ बनाये रक्खा, देश में भी कैथोलिक मत के नये नये गिर्जे बनने लगे और महन्त लोगों का ज़ोर दिखाई पड़ने लगा। रोम के पोप की इस कृपा के सिवा योरोप के सब राजा लोग रानी क्रिश्चिना से पूरा हित मानते थे।

चतुर सैगास्टा ने कई एक सुधार किये। इसने कुल राज्य के और उसके सूबों के भिन्न भिन्न शासन नियमों को इकट्ठा और पुष्ट करने के लिए एक बड़ा कानून तयार किया। बहुत से मुकद्दमों में पचों की सहायता से फैसला करने की रीति चलाई गई। सार्वजनिक सभा और उनके अधिवेशन, छापेखाने की स्वतन्त्रता और प्रजा के स्वत्वों को ठीक और नियमित करने के लिए नये नये कानून प्रचलित किये गये। इन सब में प्रजा के साथ पूरी उदारता और सहनशीलता की गई। इन पर नई ज्योति और उसकी ऊँची अभिलाषों के स्वीकार करने की मोहर साफ तौर से लगी हुई थी। व्यापार-सम्बन्धी उन्नति को पूरी सहायता देने के लिए कई एक सन्धियाँ की गईं, जिनसे कि स्पेन देश के व्यवसाय को दिनदूनी रात चैागुनी तरक्की करने का मैाका मिला। चुंगी लेने के कानून में भी बहुत से परिवर्तन किये गये।

ऊपर लिखे हुए सुधारों पर मानों मुकुट रखते हुए सैगास्टा ने देश में प्रजा के स्वत्वों को बढ़ाने के लिए "सफरेज बिल" (लोगों के वोट या सम्मति देने के अधिकारों को ज्यादा करने के लिए कानून का मस्विदा) १८९० में कोर्टीस और काग्रेस में पेश किया। इस मस्विदे को इन दोनों शासन सभाओं ने पास भी कर दिया। इस पर सनातनी दल वाले बहुत ज्यादा बिगड़ उठे और उसी साल रानी क्रिश्चिना ने कैनोवास को फिर बुलाकर अनुदार दल की नई मन्त्रि-समिति तैयार कराई। इस ने आते ही आते व्यापार-सम्बन्धी नीति में हेर फेर करके कुछ सन्धियों की उपेक्षा की और बाहरी माल पर चुंगी फिर ज्यादा कर दी, जिससे कि देश के व्यवसाय को बड़ा धक्का पहुँचा। जब इस के चलाये उचित रीति से काम न चला, तब फिर सैगास्टा ही को बुलाना आवश्यक जान पड़ा।

इस नये शासन के आरम्भ ही में मुराको और अमेरिका के समीप क्यूबा द्वीप का झगड़ा उठ खड़ा हुआ। पहले विवाद को तो सैगास्टा ने मुराको के सुल्तान से शान्ति बनाये रखने की प्रतिज्ञा लेकर समाप्त किया, परन्तु दूसरा भयकर रूप धारण करता गया। कारण यह था कि क्यूबा निवासी एक बारगी स्वराज्य चाहते थे और स्पेन उन्हें धीरे धीरे स्वत्व देना चाहता था। क्यूबा वालों ने इस पर लड़ाई झगड़ा भी किया, तब यहाँ से सेना को भेज कर उन्हें शान्त करना पड़ा। इधर स्पेन ही में सेना ने कुछ खास बातों के लिए अपना अनुचित ज़ोर दिखाना चाहा—जैसे यदि कोई समाचार पत्र सेना की निन्दा लिखता, तो उसके सिपाही लोग

कानून की कुछ भी परवा न करके उसके छापेखाने और दफ़्र पर हमला कर बैठते थे इत्यादि—और सैगास्टा इस सैनिक उच्छृङ्खलता को बिल्कुल नापसन्द करता था। जब अपनी नीति को वह कई कारणों से पूर्णतया काम में न ला सका, उसने तुरन्त कैनोवास के लिए अपना स्थान खाली कर दिया।

इधर क्यूबा वाले मामले में अमेरिका देश (संयुक्त रियासतें) अपना हाथ डालता जाता था और इसी समय वहाँ से यह समाचार आया कि स्पेन को क्यूबा निवासियों को सब स्वत्व अवश्य देने चाहिए, ताकि वहाँ की अशान्ति दूर हो और बहुत समीप होने से अमेरिका के काम में कुछ बाधा न पड़े। इस दशा में सनातनी दल के मंत्री लोग प्रबन्ध न चला सके और सैगास्टा को फिर काम पर लौटना पड़ा। स्पेनवासी क्यूबा पर अपना स्वत्व छोड़ने को तैयार न थे, उधर अमेरिका इस मामले को उचित रीति से खतम करने के लिए दबाव डाल रहा था। परिणाम यह हुआ कि दोनों में घोर युद्ध हुआ और अन्त में इस देश को क्यूबा और अपने कई एक और द्वीपों से हाथ धोना पड़ा।

उपर्युक्त लड़ाई से स्पेन ने सिर्फ नीचा ही न देखा, वरन् बहुत कुछ हानि भी उठाई। इधर इस पर ऋण भी बहुत हो गया था। इस कारण से आय व्यय के लेखे में सुधार करने की जरूरत पड़ी और कुछ नये नये टैक्सों का भी विचार किया गया, परन्तु प्रजा गत संग्राम एवं उसके परिणाम से वैसे ही दुःखित थी, इन नये प्रस्तावों से वह और भी अशान्त हुई। प्रजा यह चाहती थी कि

जातीय व्यय में कमी करके देश की आमदनी पुष्ट की जाय और नये कर न बाँधे जावे ।

उदार दल से लोग कुछ अप्रसन्न थे, इस कारण से सिलवेला को मन्त्री बनाकर सुयोग्य विलावर्डी को आयविभाग का काम सौंपा गया । इसने अनेक आर्थिक सुधार करके पहले ही साल ४२ करोड़ रुपये की बचत दिखाई, परन्तु इसके मितव्ययी होने के कारण सेना विभाग वाले इस पर कुछ नाराज होगये थे और अन्त में इसे अपना काम छोड़ना पड़ा। सिलवेला अब अकेले होने से कुछ न कर पाया और सैगास्टा ने फिर काम शुरू किया। १९०२ तक इसी तरह उदार और सनातनी दलों के लोगों की विवादशीलता के कारण मन्त्रिमण्डल में कई वार परिवर्तन हुए। इस समय उन पादरियो और धार्मिक संस्थाओं से जो व्यापार करने लगी थीं टैक्स लेने का प्रयत्न किया गया और कई एक गर्म दल के नेता जो देश में गड़बड़ कर रहे थे शान्त किये गये ।

१६—स्पेन देश का साहित्य ।

बारहवीं शताब्दी के पहले की बनी हुई किसी पुस्तक का पता यहां नहीं चलता है। जैसा कि प्रकृति का नियम है पहले पहल इस देश में भी कविता का ही प्रारम्भ हुआ। बहुत आरम्भिक दशा में कवि लोग राजाओं और उनके प्रसिद्ध सग्रामों की बड़ाई करने के लिए गद्य रचा करते थे। १३ वीं सदी से धार्मिक और नैतिक

कविता का जन्म हुआ। गान्ज़ैलो डी बर्सियो इस समय का उत्तम कवि था। १४ वीं शताब्दी में जुआन रुइज़ नामक बड़ाही प्रतिभाशाली कवि हुआ, इसने रमणी एव प्रेम इन दो विषयों पर नवीन रीति से पुस्तकें लिखी हैं। १५ वीं सदी से कवियो ने राजा से आश्रय पाकर "दरबारी" कविता की सृष्टि की, इसमें रूपक वर्णन के लिए रुचि साफ झलकती है और इटली देश के साहित्य का प्रभाव इस पर बहुत कुछ पड़ा है। इसके बाद गाने योग्य कवितायें तैयार हुई। लोप डी वैगा, गांगोरा और केवेडो इस समय के मुख्य कवि हैं। ये लोग भँडौआ कविता के लिखने में भी बहुत सिद्धहस्त थे। १७ वीं सदी की समाप्ति से यहाँ पर नई बातो के लिखने की शक्ति बहुत कम पड़ गई और फ्रांस के साहित्य का अनुकरण विशेषतया आरम्भ किया गया, तथापि डीगो गानज़ालेज़ (१७३३-१७९४) और जासे इग्लेसियस डीला कैसा (१७४८—१७९१) अच्छे कवि थे।

यहाँ पर नाटको का आरम्भ पहले पहल गिर्जाघरों के धार्मिक खेलो से हुआ। किसी त्योहार क होने पर पादरी लोग नाटक खेलवाते थे। इनमें धीरे धीरे उन्नति होती चली आई और १७ वीं शताब्दी से साधारण जीवन-सम्बन्धी नाटक भी तैयार किये गये। १९ वीं सदी में ब्रेटान डी लो हरेरस नामी नाटककार हुआ, इसने १०० के ऊपर सुखान्त नाटक लिखे हैं। सेराफिन आल्वारेज़ क्विन्टेरो (१८७१—)

और जोआक्विन (१८७३—) इस समय के उत्तम नाटककार और सालेडार रुएडा (१८५७—) विसेंटी मेडिना (१८६६—) और जोज़े मेरिया गैब्रियल इगालॉ (मृत्यु १९०५) उत्कृष्ट कवि हैं।

१५ वीं शताब्दी तक यहां के लोग उपन्यासों को कथा की तरह ज़बानी कहा और सुना करते थे। इस के बाद इन के लिखने की आयोजना हुई। हमारे साहित्य के पचतन्त्र नामक ग्रन्थ का अरबी में "कलैला दम्ना" नाम से अनुवाद हो चुका था, उससे स्पैनिश भाषा में भी १३ वीं शताब्दी में अनुवाद कर लिया गया। इसी तरह से कुछ और भी कथाओं के अनुवाद किये गये थे। इधर १३—१६ वी सदी तक कुछ राजा लोगो ने भी अपने राजत्व काल का हाल लिखवाना शुरू कर दिया था। इन बातो से गद्य लिखने में बहुत कुछ उत्तेजना मिलती जाती थी। १६ वीं और १७ वीं सदी ही में स्पेन के साहित्य का स्वर्णकाल है और इसके बाद ही यहां की प्रतिभा में कुछ कुछ अवनति होने लगी। स्वर्णकाल में लोप डी वैगा, सानाज़ारो माटेओ आलेमान और सर्वाटीज़ बहुतही नामी और उत्तम लेखक हुए हैं। अनन्तर मैनुएल फर्नेंडीज़ इगान्ज़ालेज़ (मृ० १८८८) और जोज़े मैरिया डी पेरेडा उत्तम उपन्यास-कार हुए और वर्तमान समय में लुई कालोमा (१८५१—) विसैंटी व्लास्को इबानेज़ (१८६६) और

मार्टीनेज़ सिएरा (१८८२—) साहित्य की इस शाखा के अच्छे सहायक हैं।

स्पेन साहित्य अभी इतिहास से प्राय खाली है। यहाँ के विद्वानों का स्वभाव इतिहास के लिए मसाला इकट्ठा करने का ज्यादा है पर उसके तैयार करने का कम है। जो पुराने हालात कुछ राजाओं के समय में पहले लिखे गये थे, उन्हीं को एकत्र करके पुस्तकें छापने का यत्न किया गया है। इसके सिवा फ़्रैन्सिस्को कार्डेनास (१८१६-१८९८) और सीज़ारेओ फ़र्नांडीज़ डूरो (१८३०-१९०७) इत्यादि ने कुछ उत्तम ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखे हैं। फ़्रैन्सिस्को राड्रीग्वेज़ मैरीन (१८५५—) और अडोल्फ़ो बानिला इ सॉ मार्टीन आदि वर्तमान उत्तम इतिहास-लेखक हैं।

यहाँ दर्शनशास्त्र की पुस्तकों की कमी है। १६ वीं और १७ वीं सदी में अफ़्लातून और अरस्तू की पुस्तकों के अनुवाद या अनुकरण किये गये थे, तब से अब तक भी यह साहित्यशाखा वैसी ही खाली चली आती है। १६ वीं सदी में यह रीति थी कि बड़े बड़े और रोचक पत्र छपवाकर सर्वसाधारण को नई नई बातें सिखाई जावें और उन्हीं के द्वारा शासन में सुधार करने के प्रस्ताव भी किये जाएं। ऐंटोनियो डी ग्वीवेरा (मृ० १५४४) अच्छा पत्र-लेखक था।

ने सख़्ती के साथ इस विद्रोह को ठंढा किया और उसके नेता को गोली से मरवा दिया। इस बात पर "कोर्टेस" के सदस्यों ने अपनी प्रबल अप्रसन्नता प्रकट की। आक्टोबर १९०९ में मौरा ने अपने पद से इस्तेफा दे दिया।

एक वर्ष तक मोरे ने मन्त्रित्व का काम चलाया और वह देश को शान्त करने के यत्न में रहा। १९१० में नई शासन-सभा (कोर्टेस) का चुनाव हुआ और इसमें उदार दल वालों की अधिकता रही। इस कारण से कैनालेजास के हाथ में शासन भार आया। इसने कई एक सुयोग्य उदार दल के लोग एकत्र करके अपनी शासन समिति बनाई और स्वयमेव उसका सभापति हुआ। इस समय से रोम के पोप के साथ कई एक बातो पर झगडा शुरू हुआ। यहाँ की शासन-सभा इस बात के फेर में है कि अपने देश के धर्म-सम्बन्धी मामलों में अपना ही सिर ऊँचा रहे और पोप और उसकी अदालत की शक्ति कम हो जाय। धार्मिक मामले भले ही पोप के हाथ रहें, परन्तु अन्य समस्त शासन-सम्बन्धी काम "कोर्टेस" नामक यहाँ की पार्लामेंट ही निश्चित किया करे। यह विवाद अब तक समाप्त नहीं हुआ है और पार्लामेंट अपना बल बढाती चली आ रही है। आज कल एक नया कानून तैयार किया जारहा है जिससे पादड़ी लोगो की शक्ति के बहुत कुछ परिमित होने की सम्भावना है।

दिसम्बर १९१२ में नई मन्त्रि समिति तैयार की गई और काउंट रोमैनोज उसके सभापति और मुख्य मन्त्री बने। देश के कुल शासन का काम इसी समिति के हाथ में है। २८ आक्टोबर

१९१३ को यह समाचार आया था कि उदार दल में कुछ अनबन हो जाने से महामन्त्री काउंट रोमैनोज ने इस्तेफा दे दिया। उनके स्थान में सनातनी दल के नेता मैारा के फिर नियत किये जाने की सम्भावना थी। अगस्त १९१४ के योरोपदेशीय महाभारत में जो बडे भयानकरूप से फ्रांस, बेल्जियम, रूस, इग्लैंड एव जापान तथा जर्मनी एव आस्ट्रिया में हो रहा है इस देश ने किसी की भी श्रोर से लडना नहीं शुरू किया है श्रोर पूर्णतया तटस्थ है।

२१—देश की वर्तमान अवस्था।

(१९१४)।

खास स्पेन देश, बेलियरिक श्रोर कैनेरी द्वीप श्रोर अफरीका के कुछ उपनिवेश मिलकर स्पेन राज्य कहलाते हैं। १९१३ के आय व्यय के लेखे के अनुकूल इस राज्य की आमदनी ६२४२७०७५५) श्रोर खर्च ६१२१६०४५०) है। सन् १९११ में बाहर से प्राय ५५ करोड ३३ लाख रुपये का माल यहां आया श्रोर प्राय ५५ करोड १ लाख का माल इस देश से श्रोर मुल्कों को भेजा गया। सन् १९१२ में यहां ९,१७९ मील रेलवे लाईन थी। विना तार की सहायता के भी तडित् समाचार भेजने के लिए स्पेन में प्रबन्ध होगया है।

जून १९११ के कानून के अनुकूल इस राज्य के समस्त निवासियों को मजबूरन् १८ साल तक कम या ज़्यादा फोज में काम करना पडता है। ३ साल, तक—परन्तु बहुधा २ ही साल के

शुद्धिपत्र *

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
–)	८†	क्योकि	क्यांकि
–)	७†	७ ५	७५
–)॥	६†	फलाभूत	फलीभूत
–)॥।	५	पांचवा	पाचवे
।)	७†	प्रपना	अपना
१५	५	केद	कैद
२१	११†	पुस्तक	पुस्तकें
२६	८	की	कि
३६	७†	कब्जे	कब्जे
३६	६†	पेहा	पेड़ो
४५	१	उन्ह	उन्हें
६१	६†	स्वग	स्वर्ग

---

* विशेष सुभीते क लिए हम उन सभी अशुद्धियां को यहा पर दिये देते है जो या तो टाइप के साफ न उठन अथवा मात्राओं के टूट जाने से होगई हैं सम्भव है इन में स कुछ अशुद्धियां कुछ प्रतियो म ठीक उठ आई हो।

† इन पंक्तियो की गिनती नीचे से करना चाहिए।